ओ३म्
आर्य समाज सांताक्रुझ
ARYA SAMAJ SANTACRUZ
स्थापना वर्ष:१९४२

नूतन निष्काम पत्रिका

नूतन निष्काम पत्रिका ❑ वर्ष-7 ❑ अंक-३ ❑ मुम्बई ❑ मार्च-2016 ❑ मूल्य-रु.9/-

रक्तसाक्षी पं. लेखरामजी

जन्म: 8 चैत्र सं.1915 स्वर्गवास: फाल्गुन सुदी 3 सं. 1953

धर्मवीर पं. लेखराम जी का जन्म 8 चैत्र सं. 1915 वि. में झेलम जिले के सैयदपुर ग्राम में श्रीयुत तारासिंह के यहाँ हुआ। आप पुलिस विभाग में सार्जेन्ट के पद तक पहुँचे। मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी के साहित्य के संपर्क में आने पर महर्षि दयानन्द की विचारधारा से परिचित तथा अत्यन्त प्रभावित हुए। 1880 में उन्होंने पेशावर मे आर्य समाज की स्थापना की तथा 'धर्मोपदेश' नामक पत्र का प्रकाशन किया। 1881 मई में महर्षि दयानन्द के अजमेर प्रवास के समय आपने गुरूदेव के साक्षात् दर्शन कर अपनी समस्त शंकाओं का निवारण किया। वैदिक धर्म प्रचार हेतु पूर्णत: समर्पण की भावना के फलस्वरुप आपने सरकारी सेवा से भी त्यागपत्र दे दिया। अब वे दिन रात वैदिक धर्म के प्रचार में रत् रहने लगे। प्रचारार्थ अहर्निश यात्राओं के कारण आप आर्य पथिक के रूप में विख्यात् हो गये। अपनी प्रचार यात्राओं के कारण पत्नि व पुत्र पर ज्यादा ध्यान नहीं दे पाते थे। पुत्र की डेढ़ वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो जाने पर भी आप कर्त्तव्यरत् रहे। उनके द्वारा संकलित महर्षि दयानन्द का जीवन चरित्र आर्य जगत् को उनकी अमूल्य देन है।

वे अत्यन्त त्यागी, सरल स्वाभावी, प्रतिज्ञा पालन के पक्के, तेजस्वी, मन्यु-प्रवण, आर्य सिद्धान्त के अटल विश्वासी, आदर्श धर्म प्रचारक थे।

भगतसिंग सुखदेव राजगुरु

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती

- सुषमा चोपड़ा
9323222352

स्वामी दयानन्द का जन्म १२ फरवरी १८२४ को गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर हुआ। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पिता का नाम करसन जी लालजी तिवारी तथा माता का नाम यशोदा बाई था। स्वामी जी की मातृभाषा गुजराती थी। उस समय सभी ग्रन्थ संस्कृत में थे तो आपने पाठशाला जाकर संस्कृत सीखी और संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन किया।

छोटी आयु में ही आपके मन पर तीन घटनाओं का बहुत प्रभाव पड़ा। प्रिय चाचा की मृत्यु, बहन की मृत्यु तथा शिवरात्रि पर चूँहे द्वारा शिव पर चढ़ाये गये भोग को खाना। अत: अपने २१ वर्ष की आयु में सच्चे शिव की खोज में घर छोड़ दिया। चौदह वर्षों तक जंगल तथा पहाड़ों में सच्चे गुरु को खोजते रहे। बहुत से योगी व साधुओं से योग विद्या सीखीं और बड़ी श्रद्धा से अनेक शास्त्रों का अध्ययन किया। प्राणी मात्र के प्रति उनकी दया भावना को देखते हुए महात्मा पूर्णानन्द सरस्वती ने मूलशंकर को दयानन्द नाम दिया। अंत में मथुरा में ब्रह्मर्षि स्वामी विरजानन्द दण्डी की कुटिया में गये। गुरु विरजानन्द के पास तीन वर्ष तक अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का गहरा अध्ययन किया। गुरु विरजानन्द की आज्ञा से भारत के अनेक नगरों में वेद भाष्य का कार्य किया। सन १८६७ में हरिद्वार में जाकर पाखण्ड खण्ड़िनी पताका फहरायी थी।

स्वामी जी नें भारतीय समाज में फैली बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाई। बाल विवाह, सतीप्रथा, दहेज प्रथा, छूआछूत, मूर्ति पूजा आदि का विरोध किया। विधवा विवाह का समर्थन किया। आप स्त्रियों को समान अधिकार तथा शिक्षा के पक्ष धर थे। आपने सन १८७५ में मुम्बई में पहली आर्य समाज की स्थापना की। हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाया ताकि देश एक सूत्र में बंध सके। आपने भारतवासियों में देश भक्ति व स्वतंत्रता की भावना भरी। असत्य, अंधविश्वास तथा अज्ञान का खंडन किया। वैदिक अभिवादन 'नमस्ते' करना सिखाया। आर्य समाज संस्था के लिये दस नियम बनाए। स्वामी जी का आदेश था कि इन नियमों का पालन किया जाय। स्वामी जी ने भारत को जगाया, देश को एक दिशा दी, उनका कहना था 'वेदों की ओर लौटो'।

ऐसे महान स्वामी जी का मृत्यु सन् १८८३ में दीपावली की रात को अजमेर में हुई। उनके रसोइये ने एक वैश्या नन्ही जान के कहने पर दूध में उन्हें विष मिलाकर दे दिया। स्वामी को इस बात की जानकारी हो गई फिर भी उन्होंने रसोइये जगन्नाथ को क्षमा कर उसे भारत छोड़ कर नेपाल जानेके लिए कह दिया।

स्वामी जी नें कुल ४४ पुस्तकें लिखी तथा उनके प्रवचनों के तीन ग्रन्थ हैं अत: कुल ४७ पुस्तकें हैं। उनकी पहली पुस्तक सन्ध्योपासना विधि है। जो सन १८६३ में छपी। आपकी सबसे प्रसद्धि पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' है। स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित प्रमुख पुस्तकें -

(१) संन्ध्योपासनाविधि - १८६३ (२) भागवत खंडन - १८६६

(३) काशी शास्त्रार्थ - १८६९ (४) सद्धर्म विचार - १८६३,

(५) अद्वैतनत खण्डन १८७० (६) गर्दभताविनी उपनिषद् - १८७४

(७) सत्यार्थ प्रकाश - १८८२ (८) पंच महायज्ञविधि १८७४ (९) वेद भाष्य का नमूना १८७४ (१०) वेद विरुद्धमत खण्डन १८७४

(११) वेदान्तिध्वान्त निवारण १८७४ (१२) शिक्षापत्र ध्वान्तनिवारण १८७४ (१३) आर्यभिविनय - १८७५ (१४) संस्कार विधि १८८३

(१५) चतुर्वेदविषयसूची १८७६ (१६) वेद भाष्य का दूसरा नमूना १८७६

(१७) ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका - १८७६ (१८) वेद भाष्य - १८८३

(१९) आर्योद्देश्यरता माला - १८७६ (२०) भ्रन्ति निवारण - १८७७

(२१) अष्टाध्यायी भाष्य - १८७९ (२२) आत्म चरित्र - १८७९

(२३) संस्कृतवाक्य प्रबोध - १८७९ (२४) व्यवहार भानु - १८७८

(२५) गौतम अहिल्या और इन्द्र वृत्रासुर की सत्य कथा - १८८०

(२६) भ्रमोच्छेदन १८८० (२७) अनुममोच्छेदन - १८८०

(२८) गोकरूणानिधि - १८८०

(२९) से ४४ तक - वेदांग प्रकाश - १८८० से १८८३

(४५) शास्त्रार्थ - ६ शास्त्रार्थ लिखित रूप से उपलब्ध हैं।

(४६) उपदेशमन्जरी (४९) पत्र और विज्ञापन

सत्यार्थ प्रकाश - सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित प्रसिद्ध ग्रन्थ है। सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग कराना ही इसका मुख्य उद्देश्य है। सत्यार्थ प्रकाश में चौदह सम्मुल्लास हैं -

(१) ईश्वर नाम व्याख्या इसमें ईश्वर के सौ नामों की ख्याख्या है।

(२) बाल शिक्षा (३) अध्ययन अध्यापन तथा ब्रह्मचर्य (४) समावर्तन विवाह गृहस्थाश्रम (५) वानप्रस्थ और संन्यास (६) राज धर्म (७) ईश्वर और वेद (८) सृष्टि की उत्पति विषय (९) विद्या अविद्या और बन्ध मोक्ष विचार (१०) आचार अनाचार और भक्ष्य अभक्ष्य व्याख्या

(११) आर्यावर्ती देशीय मत मतान्तर खण्डन मण्डन (१२) नास्तिक मत समीक्षा (१३) कृश्चीन मत समीक्षा (१४) यवन मत समीक्षा, स्वमन्तव्याम न्तव्य प्रकाश:

आर्य समाज सांताक्रुज़, मुम्बई का मासिक मुखपत्र
वर्ष : ७ अंक ३ (मार्च - २०१६)

- दयानंदाब्द : १९२, विक्रम सम्वत् : २०७३
- सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,११६

प्रबन्ध संपादक : चन्द्रगुप्त आर्य
संपादक : संगीत आर्य
सह संपादक : संदीप आर्य
कार्यकारी संपादक : विनोद कुमार शास्त्री
लालचन्द आर्य, रमेश आर्य,
यशबाला गुप्ता.

विज्ञापन की दरें : शुल्क

- पूरा पृष्ठ : रु. ३,०००/- • एक प्रति : रु. ९/-
- १/२ पृष्ठ : रु. २,०००/- • वार्षिक : रु. १००/-
- १/४ पृष्ठ : रु. १,५००/- • आजीवन : रु. १०००/-
- विशेषांक की दरें भिन्न होंगी ।

वर्गीकृत विज्ञापन

रु. १०/- प्रति शब्द, न्यूनतम रु. ५००/-

चैक/डीडी/मनी आर्डर आदि 'आर्य समाज सान्ताक्रुज' के नाम से ही भेजें, मुंबई के बाहर के चैक न भेजे। विज्ञापन सामग्री १० तारीख तक भेजें। 'नूतन निष्काम पत्रिका' का मुद्रण ऑफसेट विधि से होता है।

पता : आर्य समाज सांताक्रुज़
(विठ्ठलभाई पटेल मार्ग) लिंकिंग रोड, सांताक्रुज़ (प.), मुंबई -५४. फोन: २६६० २८००, २६६० २०७५

अनुक्रमणिका	पृष्ठ सं.
आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती	२
सम्पादकीय	३
प्रार्थना/आचरण	४
महत्व खेल का/हम सभी मेल-जोल से रहे	५
जस करनी तस भोग हूँ ताता	६
सरमा पणि संवाद-एक विवेचन	७-८
ऐ मन! जाग	८
आर्य समाज के कर्मयोगी संत आचार्य बलदेव जी....	९-१०
उसके प्रकाश के लिए अपने-आपको खाली कर लो	११-१२
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में	१२
नाल्पे सुस्वमस्ति	१३-१४
धर्म जाति भेद नहीं सिखाता	१५-१६
विचार शक्ति का चमत्कार	१६

सम्पादकीय — शहीद दिवस और आर्य समाज

दिनांक 23 मार्च 1931 के दिन भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू को ब्रिटीश हुकुमत द्वारा फांसी की सजा दी गयी थी। इस दिन को सारा देश शहीद दिवस के रूप में मनाता है। हृदय पटल पर अंकित शहीदों के चेहरे याद आते ही आंखें नम हो जाती हैं। स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना सर्वस्व आहुत करने वाले वीरों, देशभक्तों को हम इस दिन याद करते हैं। कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। अस्तु !

इतिहास के पन्नों को देखें तो सन् 1857 का विद्रोह ब्रिटीश सरकार द्वारा शडयंत्र के तहत एक साम्प्रदायिक चिन्गारी थी जो ब्रिटीश शासक के खिलाफ शनै शनै विद्रोह का रूप लेती गयी। ऐतिहासिक महापुरूषों ने अपने अपने तरीके से संघर्ष करते करते भारत माँ को गुलामी की जंजीरों से छुडाने का महान कार्य किया। इसी क्रम में महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर वाक्य कइयों के लिये प्रेरणास्त्रोत बने। स्वराष्ट्र की परिकल्पना सर्वप्रथम महर्षि ने ही दी। सन् 1875 में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश के अष्टमसमुल्लास में एक जगह महर्षि ने लिखा, ''कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता हैं वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य प्रजा पर पिता माता के समान कृपा, दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'' महर्षि के इन्ही विचारों को कई महान ऐतिहासिक नेताओं ने स्वीकारा भी है।

महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर आर्य समाज के माध्यम से कई क्रान्तिकारियों, स्वतन्त्रता सेनानियों, शहीदों ने भारत माता को स्वतन्त्रता दिलाने में अहम् भूमिका निभायी। इतिहास साक्षी है कि स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। महर्षि द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश से प्रेरणा पाकर शहीदों ने राष्ट्र के लिये अपनी शहादत दी। उनके सपने थे कि हमारे राष्ट्र के किसान, गरीब इन सबका स्वतन्त्रता मिलने पर कल्याण होगा। आर्य समाज की प्रेरणा एवं उसके सम्पर्क में आकर जिन महान विभूतियों ने अपना सर्वस्व आहुत किया उनके त्याग समर्पण को व्यर्थ न जाने देने की जवाबदारी भी नैतिकता से आर्य समाज की ही है। वर्तमान् में आर्थिक उदारीकरन एवं वैश्विक व्यापार के फैलते मकड़ जाल एवं विश्व के गिने- चुने पूंजी-पतियों की शक्ति के आगे नत मस्तक होते राष्ट्र के नेताओं को स्मरण कराने की आवश्यकता है कि शहादत किसान व गरीबों को खुश करने के लिये थी। न कि विकास के नाम पर उनकी जमीन हड़पकर उन्हें हमेशा के लिये बर्बाद करने की। आज राष्ट्र में सभी साम्प्रदायिक दल, राजनैतिक दल, सांस्कृतिक केन्द्र, राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़कर अपनी बातें रखते हैं, किन्तु सही बात / विचार जिस संस्था के पास है वह मौन है। आज आवश्यकता है कि आर्य समाज राष्ट्र की मुख्य धारा में आकर अपनी बात / विचारधारा राष्ट्र के सामने रखे और शहीदों के सपनों को साकार करने की दिशा में राष्ट्र के विकास को ले जाये। यही शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी। वरना आज राष्ट्र पुनः गिने चुने पूंजीपतियों की कठपुतली बनने जा रहा है जिसकी नजर हम पर सिर्फ उपभोक्ता तक है। हमारे सिद्धान्त, दर्शन, धर्म, देशभक्ति इनके लिये सिर्फ व्यापारिक उद्देश्य तक सीमित हैं। ये अपने व्यापार के लिये हमारी भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। आज की भाषा में इसे मार्केटिंग कहा जा रहा है जो एक छलावा मात्र है। आर्य समाज को आज अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखते हुए, राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़कर अवैदिक कार्यों का विरोध करना चाहिए। आज विचारों को खुलकर व्यक्त किया जा रहा है। साथ ही सही विचारधारा सबको समझ में आ रही है। आर्य समाज आज अपनी विचारधारा को राष्ट्र के सामने रखकर मुख्य धारा में आ सकता है और कल्याण के कार्य कर सकता है। यही शहीदों को सच्ची श्रद्धांजली होगी।

- संगीत आर्य- 9323 573 892

१. प्रार्थना

सोनू और मोनू दो भाई थे। दोनों भाई का नामांकन माता पिता जी ने गाँव के एक स्कूल में करा दिया था। दोनों भाई जब नामांकन के बाद प्रथम दिन स्कूल गये तो गुरू जी ने प्रार्थना में जाने का इशारा किया। इशारे को तो बालक समझ न पाया परन्तु सभी बच्चों को जाते देख वह भी लाईन में जाकर खड़ा हो गया। सभी लड़कों के साथ हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

एक लड़का पंक्ति से निकल सभी लड़कों के सामने खड़ा हाथ जोड़ बोलने लगा। हे प्रभो आनन्द दाता, ज्ञान मुझको दिजिए। दोनों भाइयों ने मिल उस लड़के के बोलती के अनुसरण करते हुए वह भी गाया। हे प्रभो आनन्द दाता, ज्ञान मुझको दिजिए। शीघ्र सारे दुरगुणों को दूर हमसे किजिए। हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान मुझको दिजिऐ। शीघ्र सारे दुरगुणों को दूर हमसे किजिए। लिजिए अपनी शरण में हम सदाचारी बने। हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान मुझको दिजिऐ। दोनों भाई फिर अपने वर्ग में पढ़ने चले गये।

२. आचरण

एक बालक था उसका नाम राजेश प्रसाद था। उसने पूछा? सर- आचरण एवं सुन्दर आचरण किसे कहते हैं। लेखक के साथ एक बुजुर्ग नगीना पासवान बैठा था। वह जवान होते ही वाम पंथ विचार से प्रभावित हो गया था। उसका घर रामपुर में है। तुरंत वह तपाक से बोल उठा ! अरे तुम इतना भी नहीं जानते देखो मै बताता हूँ। गौर से समझोगे तब न !

आचरण सुन्दर का अर्थ है किसी काम को सही ढ़ंग से करना, उचित आचरण करना और नम्रता के साथ बोलना। शिष्ट व्यवहार ही मनुष्य की परख है। किसी भी व्यक्ति के अच्छे बुरे की पहचान उस के व्यवहार से होती है। मनुष्य अपने व्यवहार से अपनी प्रकृति व्यक्त करते हैं। हमारे आचरण हमारे व्यवहार से अपनी प्रकृति व्यक्त करते है। हमारे आचरण हमारे व्यवहार के महत्वपूर्ण रूप है। अत: हमें अपने जीवन में व्यवहार के अच्छे-अच्छे तरीके अपनाने चाहिए।

हमें दूसरे के साथ नम्रता से बातें करनी चाहिए। हम किस तरह दूसरों से बातें करते हैं वह इसका प्रतीक है कि हम उनका कितना आदर करते हैं। यदि हम किसी से नम्रता से बोलते हैं तो उनकी नजर में हम शिक्षित समझे जाते हैं। हम अपनी बोलचाल की भाषा में अशिष्ट शब्दों का प्रयोग करते हैं तो हम अशिष्ट और असभ्य समझे जाते हैं।

हमें बोलचाल की भाषा में सरल शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। कुछ लोग दिखाने के लिए अपनी बोलचाल की भाषा में ऐसे शब्दों का व्यवहार करते हैं जिसे कुछ ही लोग समझ पाते हैं ऐसी बाते मूर्खता का परिचायक है। हमारी भाषा में गन्दे और अश्लील शब्दों का प्रयोग हमारे बुरे विचारों का प्रतिक है हम बोलचाल की भाषा में किन शब्दों को चुनते है यह बहुत हद तक हमारे अच्छे व्यवहार पर निर्भर है। ''मेरी जगह से हट जाओ, मुर्ख'' के बजाय एक शिष्ट व्यक्ति सभ्यता पूर्वक शब्दों का प्रयोग करेगा, जैसे कृपया मेरी जगह छोड़ दें। अत: हमारे प्रयोगिक शब्द दूसरों को हमारे विचारों और समान्य व्यवहार का परिचय देते है।

परन्तु शिष्ट व्यवहार के अन्तर्गत भाषा के केवल शिष्ट शब्दों का प्रयोग ही नहीं आता है। बल्कि शिष्ट व्यवहार के लिए किसी कार्य को सही ढ़ंग से करना भी आवश्यक है। कुछ लोग बहुत स्वार्थी होते है। वह दूसरों के हिस्से कीं चीजें भी खुद हथिया लेना चाहते हैं। यह उनकी अशिष्टता है।

एक शिष्ट व्यक्ति अपने साथ-साथ दूसरों के विषय में भी सोचता है, वह हर समय चाहें वह खाने को मेज पर हो या किसी दूसरी जगह, वह दूसरों का सदैव ख्याल रखता है, कुछ छोटे और मामूली लगने बाली बातों भी लोगों पर काफी प्रभाव डालती है। जैसे हमें गुरुजनों का आदर करना चाहिए। हमें महिलाओं तथा वृद्ध व्यक्तियों का आरामदेह कुर्सियाँ देनी चाहिए। हमें दूसरों को पहले अभिवादन करना चाहिए। और उनके अभिवादन का इन्तजार नही करना चाहिए। इस प्रकार शिष्ट व्यवहार हमारे सभ्य जीवन का आधार है।

हमारे पहनावे भी अच्छे व्यवहार का परिचय देते है। एक सभ्य वक्ति हर अवसर पर सही तरीके के कपड़े पहनता है। जैसे मन्दिर, मस्जिद या गुरुद्वारे में जाते समय अपना सिर ढ़क लेना शिष्ट व्यवहार का सूचक है।

शिष्टता का सब से महत्वपूर्ण भाग अच्छा व्यवहार है। तुम यदि किसी को अँगूठा दिखाओगे या अपनी जीभ बाहर निकालकर चिढ़ाओगे तो तुम अशिष्ट समझे जाओगे। तुम्हारे व्यवहार करने के ढ़ंग सुन्दर होने चाहिए। यदि बड़े लोग तुमसे खड़े होकर बाते कर रहें हो तो तुम वैसे मत रहें। बच्चों को सदैव प्यार करोगे। गरीबों के साथ कभी भी कूर या असभ्य तरीके से पेश मत आओ। सदैव दूसरों का आदर करना सीखों। तभी तुम भी आदर के पात्र बनोगे। तुम्हें सदैव शिष्टाचार और अच्छे व्यवहार के नियमों का पालन करना चाहिए। सबों के प्रति तुम्हारे हृदय में आदर का भाव होना चाहिए। दूसरों के हित कि कामना पहले करनी चाहिए। दूसरों के साथ भी सदैव मित्रवत व्यवहार करो।

यदि तुम उपर बताये गये नियमों का पालन करो तो तुम खुद ही सही काम करना शुरू कर दोगे। साथ ही तुम्हारा व्यवहार में परिवर्तन खुद-ब-खुद आ जायगा। व्यवहार से ही एक अच्छे और बुरे व्यक्ति के बीच भिन्नता का पता चलता है। बचपन में डाली गयी अच्छी-अच्छी आदतें तुम्हारे साथ आजीवन रहती है। अत: यदि तुम जीवन में सफल होना चाहते हो तो अच्छे व्यवहार अपनाना भी मत भूलो इस से तुम नये साथियों का चुनाव भी कर सकोगे।

समझा राजेश प्रसाद और मै तुम्हें कितना बताऊँ। कोशिश करो।

३. महत्व खेल का

भाष्कर चन्द्रा विनीत ने पूछा डॉ. विष्णुपुरी दादा आप खेल, योग और शारीरिक शिक्षा पर अधिक जोर क्यों देते है? आप जो हिन्दी साहित्य और वरिष्ट पत्रकार के रुप में जाने जाते और देखे जाते है। बतायें?

डॉ. विष्णुपुरी ने कहा, सुनो पोता भाष्कर चन्द्र विनीत,! इसके पीछे जीवन को मेरा प्रयोगात्मक अध्यन है यह है, स्वस्थ सुखमय शारीरिक जीवन जीना तभी शिक्षा या अन्य समतुल्य कार्य सम्भव है अन्यथा नहीं।

सुनो भाष्कर पोता, समय के साथ खेल खेलना भी अच्छी बात है। खेल खेलना हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद है। यह हमारे शरीर में नवीन शक्ति का संचार करता है, शरीर में स्फूर्ति और उत्साह लाता है। इस से सबसे बड़ा लाभ है, अच्छी आदतें, अनुशासन एवं चरित्र का गठन। विद्यालय में हो या पड़ोस के घर पर हो या खेल के मैदान में जैसे तुम बड़ा होगे तुम टीम बनाकर खेलोगे।

खेलों में भी कुछ नियम का पालन करना पड़ेगा, तभी तुम खेल का सच्चा आनन्द उठा पाओगे। कबड्डी, फुटबॉल, वालीवॉल, क्रिकेट, हॉकी सभी खेलों के अपनी अपनी कुछ खास नियम है। अच्छे खिलाड़ी सदैव नियमों का पालन करते हैं। बुरे खिलाड़ी छल-कपंट और बेईमानी से जीतने की हरदम कोशिश करते हैं। अच्छे खिलाड़ी बेईमानी की जीत की, अपेक्षा सच्चाई की हार को ज्यादा महत्व देते हैं। उन का ध्यान हार-जीत की ओर नही रहता बल्कि मन लगाकर खेलने की ओर रहता है। अच्छे खिलाड़ी घर पर भी विजयी टीम को बधाई देते हैं।

खेल में सदा अपने कप्तान की आज्ञा मानो। अच्छा कप्तान अपने खिलाड़ियों से मिल जुलकर खेल खेलता है। खेल में एक निर्णायक होता है। दोनों ओर के सिकाड़ियों का निर्णायक का निर्णाय मानना होता हैं।

इस प्रकार हम पाते है कि खेलों के द्वारा सहयोग, आज्ञा पालन, अनुशासन, सच्चाई, इमानदारी आदि, गुणों की शिक्षा मिलती है। यही गुण हमारे भावी जीवन में काम आते हैं। हम लोगों का जीवन भी एक किड़ा क्षेत्र है जिस के हम सभी खिलाड़ी हैं। अच्छे खिलाड़ी जीवन का खेल भी साहस और हिम्मत के साथ खेलते हैं। बड़ी-बड़ी कठिनाइयों को वे हंस-हंस कर खेल जाते हैं। वे जीवन के दुर्दिन घड़ियों में भी हिम्मत का साथ नही छोड़ते, वे अपने कर्तव्यों का पालन दृढता पूर्वक करते हैं।

तुम्हें भी अपने में एक अच्छा खिलाड़ी बनने का प्रयत्न करना चाहिए। आज तक जितने भी महापुरुष हुए है, उन की जीवनीयों के अध्यन में तुम्हें ज्ञात होगा कि उन के जीवन में सच्चाई ईमानदारी, नियम-पालन, सहयोग की भावना आदि गुणें की नीव उन के बचपन के खेलों में पड़ी, उनका इतिहास बतलाता है कि वे बचपन में हार-जीत की परवाह न कर सदा सच्चाई से खेलते थे, साथ ही हार के अंगों में भी अपना उत्साह का साहस पूर्ववत् बनाये रखते थे।

सुनो पोता भाष्कर चन्द्र विनीत तुम्हें भी मन लगाकर खेलों में भाग लेना चाहिए। और सदा सच्चा खेल खेलना चाहिए।

४. हम सभी मेल-जोल से रहे

भाष्कर चन्द्र विनीत ने पूछा दादा जी आप बराबर मुझे मिल जुल कर रहने को कहते हैं। मिल-जुल क्या है आप मुझे क्यों नहीं बताते।

भाष्कर का प्रश्न भी सही था, क्योंकि वह मात्र चार साल का है। अभि वह हू-ब हू। प्रिनृ या छपने के बजाय उपाच करता है। रहस्य उस बच्चे में इतना ज्यादा छिपा है कि हर दूसरा, हर बात का वह हमेशा उत्तम चाहता है और उन इशारे बाज के साथ आदेश या आग्रह करने वाले की मदद भी करने का आस्वासन देता है। आस्वासन ही नही अगर उस बच्चे से हो सकता है तो तुरन्त कार्य को सम्पन्न करता है और मुंझे कहता है कि देखा न दादा जी चुटकी में काम कर दिया है। ऐसे बच्चे का प्रश्नोत्तर तो देना ही पड़ेगा।

मैं कहा सुना भाष्कर चन्द्र विनीत आप को सारे संसार के जीव से लेकर मानव तक ही नही पेड़ पौधों से भी मिल जुल कर अपना स्वदेश प्रेम, सहयोग देना लेना करते रहना चाहिए।

संसार में जितने भी प्राणी हैं सभी के विचार भिन्न-भिन्न हैं फिर भी, हम अकेले नही रह सकते। हम किसी पर भी अपने विचारों को लाद नही सकते हैं। अत: आप की भलाई के लिए आवश्यक है कि हम एक दूसरे के विचार को समझने की कोशिश करें और आपस में मिल जुलकर रहें।

तुम्हारे वर्ग में भी भिन्न-भिन्न विचारों के लोग हैं। तब भी आप उस के साथ मिल जुलकर रहते हो आपस में खेलते हो साथ-साथ पढ़ते हो, ऐसा न हो कि जरा सी बात पर आपस में बैर-भाव मिल जुलकर रहते हो आपस में खेलते हो साथ-साथ पढ़ते हो, ऐसा न हो कि जरा सी बात पर आपस में बैर-भाव मन मुटाव और झगड़े होते रहें। हमें शान्ति पूर्वक समझना चाहिए और साथ ही भिन्न विचार के होते हुए भी आपस में मिल-जुलकर काम करना चाहिए, देखते हो कि घर के भाई-बहन, माता-पिता सब के अपना स्वतंत्र विचार होते हैं, फिर भी सभी आपस में प्रेम से रहते है। इसी प्रकार तुम्हें अपने घर के विद्यालय मे पास पड़ोस में, समाज में दूसरों के विचारों एवं रुचियों को सहन करना चाहिए। भिन्न-भिन्न जातियों के होने के कारण हमें कलह घृणा या द्वेष की भावना नही रखनी चाहिए।

अपने सह पाठियों, अपने पड़ोसियों के साथ सदा प्रेम का व्यवहार रखने, किसी से मत लड़ा करो। हमें आपस में एकता की भावना को जगाना चाहिए। इस देश में चाहे वे जिस जाति धर्म के हो, सभी भारत वासी है। एकं भारतीय अगर दूसरो भारतीय से घृणा करता हो तो यह उस के लिए शर्म की बात है। यह हमारी सभ्यता के प्रतिकूल है। अपने-अपने धर्मो का पालन करते हुए भी हमें दूसरे के धर्मो प्रति आदर करना चाहिए।

हमारे धर्म ग्रन्थ की बात का प्रमाण होते हैं कि हमारे यहाँ पुरुषों ने भी छोटे-बड़े और हर जाति, धर्म के लोगों को अपनाया। भगवान श्री रामचन्द्र ने भीलनी शबरी के जूठे बोर खायें केवल हनुमान, सुग्रीव और विभिषण

हम सभी प्रजातंत्र राज्य के निवासी है। संविधान के अनुसार सभी धर्मो सभी जाति वालों को सामान्य अधिकार है। भारत राष्ट्र सबका है। हम सबको एकता के सूत्र में बँधकर रहना चाहिए। ताकि हम सब देश की एकता बनाने में सहयक हो सकें। राज्य की ही भांति विद्यालय घरवर भी एक छोटा जनतंत्र है। उस में भी भिन्न-भिन्न जाति और धर्म के बच्चे पढ़ते हैं। तुम्हें सबों में एकता के भाव अपनाने का आदत डालनी चाहिए।

दूसरे की बात मानने से यह मतलब न समझों कि असभ्य या अन्याय के समाने घुटने टेक दो। अपने जीवन में सदा सत्य को स्थान दो। भक्त प्रहलाद ही नहीं अनेक ऐसे बहुत से सारे लोग हुए असत्य के विरुद्ध पिता की आज्ञा का विरोध किया। तुम्हे सांसारिक प्रलोभनों में पड़कर सत्य का साथ न छोड़ना चाहिए। यदि कोई तुम्हें बुराई के रास्ते में ले जाने की कोशिश करे तो उस हालत में तुम्हें सत्य पर डटा रहना चाहिए।

इस प्रकार हमें दैनिक सामाजिक व्यवहार में सहनशीलता, मेल-जोल एवं आपसी समझौते से काम लेना चाहिए, इसी में हम सबों की भलाई है न पोता भाष्कर चन्द्र विनीत जी।

हाँ दादाजी अब मै आप के बताये हुए बातों पर जरूर अमल करूँगा।

५. जस करनी तस भोग हूँ ताता

रामपुर एक गाँव का प्राचीन बस्ती है। वहाँ पर छोटे लाल का पुत्र राजेश प्रसाद रहता है वह बार-बार सभी से पूछता हैं कि लोग कहते हैं कि जैसा करोगे वैसा भरोगे। रामपुर के राजेश प्रसाद के दुकान पर लेखक के साथ दो व्यक्ति अति पिछड़ी वर्ग के बैठै थे। लेखक उन लोगों के साथ बातचीत कर रहे थे। राजेश गेट ग्रिल का काम करता है। वह बारबार हम तीनों के साथ यह प्रश्न करता रहा। अन्त में रमा पासवानने कहा की अरे बेटा तुम जिस प्रश्न को पूछ रहा है वह अभी बताने के बाद भी नही समझोगे। इतने में साथ बैठा नगीना पासवान टपक पड़ा। और कहा ठहरो इसे मैं समझाता हूँ तुम भी रामा समझो।

सनद रहे कि इन चारों में कही न कही विचारों का समनव्य था। चारों एक दूसरे के सुख-दुख में हाथ बटाया करते थे। चारों खुश हाल थे। दिन दूना रात चौगुणा तरक्की हो रही थी। जब कि राजेश प्रसाद पिछड़ी विचार धारा और रामा, नगीना वामपंथ यानि अति पिछड़ी और लेखक शुद्ध हिन्दूवादी के साथ मजदूर विचार धारा के प्रर्वतक है। लेखक के साथ रामा से नगीना पासवान कहा आप लोग चुप हो कर मेरी बातों को गम्भीरता पूर्वक सुनो और समझें फिर तब आगे प्रश्न करना।

मगर नगीना का मिजाज कुछ दूसरा था, रामा ने उससे यानि राजेश और नगीना से चार पाँच बार लोहे की बनी गेट ग्रिल उधार मांगा था परन्तु नगीना ने साफ इन्कार कर दिया था। तब रामा ने उस से पूछा था भाई, तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मैं तूम्हारा पैसा नहीं दूँगा।

नगीना ने उसे समझाते हुए कहा था भाई रामा में ऐसा कहाँ कह रहा हूँ। तुम बड़े होने को आये और बच्चों को भी सही तरीके से समझा नहीं पाते हों।

सुनो छोटे लाल के पुत्र राजेश प्रसाद मै तुम्हें सारी बातें बता देता हूँ। आपको यह समझकर आश्चर्य होगा कि इतने मतान्तर के बाद भी चारों में समन्वय विचार को आधार मानते हुए एक साथ नहीं छुटता था। इस प्रकार चारों की दोस्ती चल रही थी। बेचारा रामा सरल और साधु स्वभाव का था। वह नगीना से दोस्ती तोड़ना नहीं चाहता था।

रामा के आँगन में एक कुआँ था एक रोज रामा की लड़की पानी भर रही थी कि बाल्टी कुँए में गिर पड़ी। बेचारी डर के मारे रोने लगी। रामा की पत्नी ने कहा पगली रोती क्यों हो? नगीना ने कहा भैया काटा मै बाहर ले जाने के लिए नहीं दे सकता। मेरे ही आँगन में कुआँ होता तो दे भी देता। रामा खाली हाथ लौट आया। उसे याद आया, चौक के महतो सुरेश के पास कॉटा है। वह उस के यहाँ से कॉटा माँग लाया और बाल्टी निकाल ली। उस घटना से रामा बहुत दु:खी हुआ। उसने नगीना से मिलना जुलना बन्द कर दिया। इस प्रकार महीनो बीत गये।

एक दिन सबेरे ही नगीना रामा के पास पहुँचा। आते ही उसने कहा भाई तुम तो जानते हो कि दिपावली निकट है। इस अवसर पर घर में चूना फिरवाने का विचार है। अत: तुम दो तीन दिनों के लिए अपनी सीढ़ी दे दो काम खतम होते ही वापस कर दूँगा।

नगीणा कुछ सोच ही रहा था कि उसकी पत्नी सामने आकर रामा से बोली भाई साहब सीढ़ी को हम लोग बाहर नहीं निकाल सकतें। अगर आप को अपना मकान उठाकर मेरे आँगन में ले आए। इतना सुनते ही नगीना पानी-पानी हो गया और चुपचाप चला गया। ठीक ही कहा गया है- जैसा करोगे वैसा पाओगे। जस करनी तस भोग हूँ ताता।

रचनाकार, डॉ. विनयकुमार विष्णुपुरी, शीला भवन, शिव शक्तिनगर, बाजार समिति.

आदर्श जीवन निर्माण शिविर

मान्यवर महोदय,

अत्यतिधक हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य वीर दल मुम्बई द्वारा प्रान्तीय (महाराष्ट्र, गुजरात) **''आदर्श जीवन निर्माण शिविर'' भैरव सेवा समिति कर्ण बधिर आवासीय विद्यालय सरावली गोवा नाका के पास भिवंडी ठाणे** के परिसर में रविवार दि.२४ अप्रैल से रविवार दि. ०१ मई २०१६ तक आयोजित किया जा रहा है। जिसमें अधिकतम ५० युवाओं (आयु सीमा १५ से २५ वर्ष) प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया गया है। कृपया १५ अपैल २०१६ तक अपने नाम पंजीकृत कर अपना स्थान सुनिश्चित करें। शिविर शुल्क रु. ७००/- निश्चित किया गया है।

विशेष- सभी शिविरार्थी शनिवार दि. २३.०४.२०१६ को शाम तक अवश्य पहुचें। यह शिविर पूर्ण रुपेण आवासीय होगा और भोजन आदि की उत्तम व्यवस्था होगी। युवाओं के सम्पूर्ण व्यक्तित्वविकास का ये सुनहरा अवसर है, जिसमें उनको आध्यात्मिक (ध्यान, संध्या, हवन) शारीरिक (जूडो) कराटे, स्केटिंग, तीरंदाजी, योग आसन प्राणायम आदि) भारतीय संस्कृति, सभ्यता, संस्कारों की शिक्षा प्रदान की जायेगी। शिविरार्थियों के नाम पंजीकरण हेतु सम्पर्क: ९९८७७८१०३५, ९०२९४२१७१८ (हाइक, व्हाट्सअप)

शुल्क व दान हेतु अकाउन्ट नं. १२८१००२१०००५५५९३ पंजाब नेशनल बैंक सान्ताक्रुज़ (प.) मुम्बई के नाम जमा कराने की कृपा करें। IFS CODE : PUNB0128100

सरमा पणि संवाद-एक विवेचन

विश्व के पुस्तकालय में उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। प्राचीन भारतीय ऋषियों का मन्तव्य है कि सृष्टि के आदि में परमपिता परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से यह ज्ञान मनुष्यों को प्रदान किया यह वेद परमपिता के नि:श्वास के समान हैं। इन ऋचाओं का मुख्य विषय स्तुति है और इस स्तुति के माध्यम से ऋषि परमात्मा के गुणों को अपने अन्दर धारण करने का प्रयास करते है। मंगलेच्छुक मनुष्य परम पवित्र इन ऋचाओं का अध्ययन करता है और स्वयं परमात्मा से ऋचाओं में स्थापित रस का आनन्द लेता है।

कालान्तर में जब वेदों का साक्षात् दर्शन कठिन हो गया तो अन्य ग्रन्थ लिखे गये२ ब्रह्मा का (वेद) व्याख्यान ही ब्राह्मण कहलाता है। इन ब्राह्मणों में वेदों के भावों को यागों में विनियोग के साथ साथ मन्त्रों की व्याख्या को रोचक बनाने के लिए नाटक का रूप दिया गया और इन नाटकों को जन तक पहुँचाने के लिए आख्यान के रूप में व्याख्यायें की गई।

सरमा तथा पणि संवाद

सरमा शब्द निर्वचन प्रसंग सें उद्धृत ऋग्वेद १०.१०८.१ के व्याख्यान में प्राप्त होता है। आचार्य यास्क का कथन है कि इन्द्र द्वारा प्रहित देवशुनी सरमा ने पणियों से संवाद किया। पणियों ने देवों की गाय चुरा ली थी। इन्द्र ने सरमा को गवान्वेषण के लिए भेजा था। यह एक प्रसिद्ध आख्यान है।

आचार्य यास्क द्वारा सरमा माध्यमिक देवताओं में पठित है। वे उसे शीघ्रगामिनी होने से सरमा मानते हैं। वस्तुत: मैत्रायणी संहिता के अनुसार भी सरमा वाक् ही है गाय रश्मियां है इस प्रकार यह आख्यान सूर्य रश्मियों के अन्वेषण का आलंकारिक वर्णन है। निरुक्त शास्त्र के अनुसार "ऋषे: दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याख्यानसंयुक्ता" अर्थात् सब जगत के प्रेरक परमात्मा अद्रष्ट अर्थों को आख्यान के माध्यम से उपदिष्ट करते हैं। वेदार्थ परम्परा के अनुसार मन्त्रों के तीन प्रकार के अर्थ होते हैं। आधिभौतिक, आदिदैविक, आध्यात्मिक, तीनों दृष्टियों से इस सूक्त के पर्यालोचन से सिद्ध होता है कि यह सूक्त किन्हीं विशेष अर्थों को कहता है। विश्लेषण के लिए इस सम्वाद में प्रयुक्त शब्दों के अर्थों को व्याकरण और निरुक्त के अनुसार समझने की आवश्यकता है।

क्रमश: एक एक शब्द पर विचार करते हैं।

पणय: ऋग्वेद में १६ बार प्रयुक्त बहुबचनान्त पणय: शब्द तथा चार बार एकबचनान्त पणि शब्द का प्रयोग है। पणि शब्द पण् व्यवहारे स्तुतौ च धातु से अच् प्रत्यय करके पुन: मतुवर्थ में अत इनिठनौ "से इति प्रत्यय करके सिद्ध होता है। य: पणते व्यवहरति स्तौति स पणि: अथवा कर्मवाच्य में पण्यते व्यवहियते सा पणि:"। अर्थात् जिसके साथ हमारा व्यवहार होता है और जिसके बिना हमारा जीवन व्यवहार नहीं चल सकता है उसे पणि कहते हैं। इस प्रकार यह पणि शब्द मेघ का वाचक है। अथवा वायु का वाचक है। इस पणि को वृत्र अथवा 'असुर' कहा गया है आचार्य यास्क ने वृत्रं वृणोते: कहकर जो आवरण करता है ढ़क लेता है उसे वृत्र कहते हैं। वही वृत्र वरण कर लेने वाला मेघ जब वारिदान करता है तब देव कहलाता है। किन्तु जब जल को सुरक्षित कर लेता है बरसने नहीं देता, तब वह असुर कहलाता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार कर सकते हैं राति ददाति इति र:सु शोभनं राति ददाति इति सुर: नु सुर: असुर: अर्थात् इस यौगिक अर्थ के अनुसार असुर शब्द पणि के प्रसंग में अवरोधक मेघ है। (२) इन्द्र, निरूक्तकार यास्क के अनुसार इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति इति इन्द्र:, इराम जलानां आनेता इन्द्र:= सूर्य। इसी तरह आदिदैविक अर्थ में इन्द्र सूर्य का वाचक है आध्यात्मिक अर्थ में इन्द्र सूर्य का वाचक हैं आध्यात्मिक अर्थ में इन्द्र जीवात्मा और परमात्मा को कहते हैं। इन्द्र सूर्य की गाव=रश्मय: गाव: इति रश्मि नामसु पठितम् (निरुक्त) अब इस कथा का भाव हुआ कि इन्द्र = सूर्य की गाव:, रश्मियों को जल न देने वाले असुरों = मेघों ने आच्छन्न कर लिया है। इन्द्र के बार बार सूचना देने पर भी पणियों ने इन्द्र की गायों को नहीं छोड़ा और जिससे प्रजा व्याकुल होने लगी, तब इन्द्र ने दूती भेजी। दूती को यहाँ पर देवशुनी शर्मा कहा गया है। सरति गच्छति सर्वत्र इति शरमा, देवाना सुनी सूचिका दूती वा देवसूनी, जो तेजी से गति करती है और देवों की दिव्यता की सूचना देती है। वह विद्युत ही यहाँ देवसुनी शरमा कही गई है। इस प्रकार देवशुनी बादल की गडगढाहट रुपी ध्वनि के साथ पणियों से संवाद करती है और कहती है कि हमारे राजा की गौओं को छोड़ दो नहीं तो हमारा बलवान राजा दण्ड देगा। पणियों ने देवशुनी की बात नहीं मानी, तब इन्द्र ने वज्र प्रहार कर अर्थात् वायु के प्रहार के माध्यम से गायों को मारकर धरती पर सुला दिया और अपनी गायों को मारकर धरती पर सुला दिया और अपनी गायों को को मुक्त करा लिया। सारा संसार वृष्टि से सुखी हुआ और सूर्य की किरणें चारों ओर फैल गईं। वैदिक आख्यानों को सामान्य अर्थों में ग्रहण न करके विशिष्ट एवं योगिक अर्थों में ही ग्रहण करना चाहिए। शब्दों के यौगिक अर्थो के आलोक में इन आख्यानों को देखने पर वेदार्थ की उत्तम आदर्श नव्य और दिव्य प्रक्रिया का ज्ञान होता है।

अन्त में प्रश्न आता है कि वैदिक आख्यानों की वास्तविकता स्वीकरणीय है अथवा अस्वीकरणीय? तो इसका संक्षेप में उत्तर यह है कि यदि रूपकालंकार की दृष्टि से वे आख्यान मन्त्रार्थ से संगत होते हैं तो वे आलंकारिक रूप से अथवा शाश्वत घटित होने वाली घटनाओं के ऐतिहासिक शैली के चित्रण के रूप में ग्राह्य एवं स्वीकरणीय हैं परन्तु यदि मन्त्र सूक्त गत संवादादि का सम्बन्ध यदि किसी अवरकालिक पुराण महाभारतादि ग्रन्थों में वर्णित अनित्य इतिहास से बलात् जोड़ा गया है और वह गठजोड़ असंगत और अटपटा लग रहा है तो उसे वास्तविक रूप में स्वीकार न करके सर्वथा अवास्तविक ही मानना चाहिए। तत्र नामान्याख्यातजानीति शाकटायनों नैरूक्तसमयश्च, तथा नाम च धातुजमाह निरुक्ते व्याकरणे शकटस्य च तोतम् के धातुज्ञ वैयाकरणों में विशेष: शाकटायनाचार्य तथा सम्पूर्ण नैरूक्त समुदाय वेद के शब्दों को धातुज अर्थात यौगिक मानते हैं। इस दृष्टि से वेद मन्त्रों से कोई रूढ़ि अर्थ या मानवीय अनित्य इतिहास के वर्णन की सम्भावना वहाँ नहीं हो सकती है। अत: सारमेयाश्वानी, यम-यमी, अश्विनी, देवापि, सरमा, पणि विश्वामित्र, ग्रत्समद इन्द्र आदि पदों से किसी लौकिक कथानक की कल्पना वेदों में करना अन्धाधुन्ध है। अत: ऐसे शब्दों और उनसे अभिव्यक्त

होने वाले कथोपकथन से किसी अन्य प्राकृतिक व वैज्ञानिक तथ्य का अनुसन्धान करना ही युक्ति संगत होगा। यदि कोई आख्यान मन्त्रार्थ को स्पष्ट करने के लिए कल्पित किये गये हैं तो उनको आलंकारिक दृष्टि से संगत मानना चाहिए। मन्त्रों में उपमा, रुपक, श्लोषादि अलंकारों का प्रयोग प्राचीन और अर्वाचीन प्राय: सभी भाष्यकारों ने स्वीकार किया। वैदिक आख्यानों में प्राकृतिकता, अलौकिकता आदि का वर्णन मिलता है। उर्वशी आख्यान में मेघों का और विद्युत का, सरमा, पणि आख्यान में विद्युत् और अवर्षणशील मेघों का, इन्द्र वृत्र आख्यान में विद्युत् और मेघ के युद्ध का वर्णन है। वैदिक ग्रन्थों ने इनका प्राकृतिक अर्थ किया है।

उपरिगत विवेचन से यह सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि मन्त्रगत इतिहास अथवा आख्यान तत्वत: औपचारिक, अर्थवादात्मक उपमार्थक अथवा आलंकारिक हैं, आधुनिक अर्थ में ऐतिहासिक नहीं। अत: उनके सम्यक् अवगम एवं विश्लेषण में अतीव सावधानी तथा चिन्तन की अपेक्षा है।

शोधच्छात्र:
उदयन आर्य (Ph.D. छात्र)
दयानन्द वैदिक अध्ययन पीठ
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़।

Management of
CONSTIPATION, GAS, ACIDITY

A Drugless Treatment with Yoga Asanas, Pranayama, Nasal Cleaning, Stomach& Colon Cleaning, Acupressure, Diet Control, Naturopathy, Mind Control, Relaxation, Sukshma Vyayama

DATE : MON. 04.04.2016 to FRI. 22.04.2016
TIME : 7.30 a.m. to 8.30 a.m. Saturday : Class at 7.00 a.m.
FEES : Rs. 2000/- Sunday : Holiday
VENUE : ARYA SAMAJ MANDIR,
Linking Road, Santacruz (West).
COURSE DIRECTOR : Yogashiromani RAGHAVA SOMESHWAR
WITH 34 YEARS EXPERIENCE.
He has conducted more than 600 Health Management Workshops With Positive Results in many Countries.
Enquiry : 98692 67131 / 96197 29682 / 2660 2800

FEED BACK FROM STUDENTS OF EARLIER WORKSHOP

VIJAY KUMBHARE - B.SC, B.A., M.B.A.: *I had severe acidity and gastritis 12 months back, I joined regular class of Arya Samaj Yoga to my utter surprise, some of my problems since long years like snoring, sneezing went away within 15 days time. Since then I became strong beliver of Yoga. Also I joined workshop for Gas and Acidity, every Asanas which are helpful in treatment of Gas and Acidity are taught with great care and precision. Really it helped me lot to reduce the problem of not only Gas and Acidity, but also other small nature problems. I suggest and appeal everybody to join Yoga and all workshops conducted by Arya Yoga Kendra which will make you perfectly healthy.*

DR. VIJAY PRABHU - M.D. (Pathology): *I enjoyed this camp very much, specially 'Asanas' which are taught properly with keen interest and proper attention as far as every individual is concerned. Even the initial talk given by Guruji on various topics like Acidity, Gas, Constipation is very informative. Even the talk on the meditation and acupressure points is very useful to follow. Pranayam and Shuddhikriya are taught properly.*

FORTHCOMMING WORKSHOP
BETTER EYE SIGHT
from Thu. 28.04.2016 to Wed. 18.05.2016 - 7.30 am. to 8.30 am.

Please pass on the handbill to your neighbour & friends

ऐ मन! जाग

तर्ज तुम क्या जानो तुम्हारी याद में

- ललित साहनी

सारा जीवन विषय की आड़े में, रहे क्यूँ तुम खोये
फिर काहे रोये?
दिवस गँवायो अनगिन धनगिन
''रैन गुज़ारी सोये'' ''फिर काहे रोये''

कितने जीवन मिले जगत में, इक इक व्यर्थ गँवाये
खिली ना कलियाँ चञ्चलमन की, अनखिल मन मुरझाये
मिलाथा सार्थक मानुष जीवन, अद्भुत आत्मा बुद्धि तनमन
क्यों ना सयाने होये?'' ''फिर काहे रोये''

घिर घिर आये दु:ख के बादर, पाप के कारण बरसे
असत, अपत अपराधी बनकर, जीते रहे डर डरके
दीप ना शुभकर्मो के जलाये, कभी किसी के काम न आये
रहे अन्धकार में सोये।। ''फिर काहे रोये''

हर दिन आई भोर सुनहरी, मिला न मन ईश्वर से
सोकर जागा, जागी तृष्णा जागा ना मन भीतर से
भक्ति की ना भूख बढ़ाई, आनन्द की ना चाह जगाई
अनवर अवसर खोये।। ''फिर काहे रोये''

द्वेष अभिमान के पेड़ लगाये फल उनके विषधर थे
तने थे पाप की धूम धरापे कभी ना वो हितकर थे
थे अभक्ष देखा जब छूकर, फिर भी खाये जान बूझकर
ऐ मूरख मन सोए! ।। ''फिर काहे रोये''

हम अल्पज्ञ तू सबकुछ जाने, जिच-जीवन को सफलकर
ज्ञान की ज्योत से हमे जगा दे रख दे हमें बदल कर
तेरी आनन्द की वर्षा में, बारबार आना तरसाने
रखना हमे भिगोये।। ''फिर काहे रोये''

(असत्)= निन्दित, जो सच्चा न हो (अपत)= निर्लज्य, बेशर्म (अनवर)= श्रेष्ठ (अभक्ष)= नाखाने योग्य (अनगिन)= असंख्य बहुत (धूम)=धुएँ से छाई हुई, (जिच)= विवश (अल्पज्ञ)= कम ज्ञान रखने वाला, अज्ञानी,

आर्य समाज के कर्मयोगी संत आचार्य बलदेव जी महाराज

यह भारत भूमि प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों तपस्वियों, साधु संतो, वीरों, वीराङ्गनाओं, पुण्यात्माओं विद्वानों, दार्शनिकों, चिन्तकों, परोपकारियों, समाज सुधारकों, ज्ञानियों, सदाचारियों, राष्ट्र-भक्तों, धार्मिकों गौ-भक्तों एवं ईश-भक्तों की भूमि रही है। समय समय पर भारत की पुनीत वसुन्धरा पर अनेक महापुरुष जन्म लेकर अपने सदुपदेशों के द्वारा भटके हुये लोगों को एक नूतन जीवन देते रहे। चाहे वह स्वामी दयानन्द हो, चाहे वह स्वामी श्रद्धानन्द हो, चाहे स्वामी स्वतंत्रानन्द हो, चाहे स्वामी सर्वानन्द हो, चाहे स्वामी ओंउमानन्द हो, चाहे स्वामी विवेकानन्द हो, चाहे स्वामी त्यागानन्द हो, चाहे स्वामी सर्वदानंद एवं दर्शनानन्द हो। इसी प्रकार अनेक धर्मवीरों राष्ट्र भक्तों एवं विराङ्गनाओं ने भी अपनी जान की परवाह न कर धर्म एवं राष्ट्र की रक्षार्थ अपने को बलिदान कर दिया। जैसे पं. लेखराम, पं. गुरुदत्त, लाला लाजपत राय, नेता सुभाषचन्द्र बोस, वीर भगत सिंह, राम प्रसाद विस्मिल राजेन्द्र लहरी, सुखदेव, खुदीराम बास, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु आदि अनेक वीरों ने भी धर्म एवं राष्ट्र की रक्षार्थे अपने को कुर्वान कर दिया। इसी श्रृंखला में शिरोमणि संत आचार्य बलदेव जी का नाम अग्रणी है। आज कौन नही जानता है कि आचार्य बलदेव जी का शिक्षण स्वामी रामदेव सम्पूर्ण विश्व में वैदिक रुपी फताका महरा रहे हैं।

यदि स्वामी दयानन्द को प्रज्ञा चक्षु ब्रह्मऋषि स्वामी विरजानन्द दण्डी न मिले होते तो आज आर्य समाज को कौन जानता? यदि स्वामी रामदेव को आचार्य बलदेव जी न मिले होते तो आज स्वामी रामदेव को कौन जानता? जिस प्रकार स्वामी विरजानन्द ने अपने शिष्य स्वामी दयानन्द को वैदिक शिक्षा देकर उन्हें एक महान् सुधारक एवं वेदों का अद्वितीय विद्वान् बनाया। उसी प्रकार आचार्य बलदेव जी ने भी स्वामी विरजानन्द बनकर स्वामी रामदेव को विद्वान् एवं योगगुरु बनाया। यदि हम आचार्य बलदेव जी को द्वितीय स्वामी विरजानन्द माने तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। वास्तव में यह सत्य है कि आचार्य बलदेव जी द्वितीय विरजानन्द थे। जिन्होंने अपने वैदिक धर्म की रक्षा एवं वेदों की रक्षार्थ स्वामी रामदेव जैसे अनेक शिष्यों को तैयार कर समाज को समर्पित किया।

आचार्य बलदेव जी का जन्म २५ अक्टुबर सन् १९३२ ई. को हरियाणा प्रान्त के सोनीपत जिले के सरगथल नामक गांव में गूगन सिंह के घर हुआ। बचपन से ही उनका जीवन सादगी एवं ऊच्च विचारों से परिपूर्ण था। उन्होंने जाट कॉलेज रोहतक से एफ. एस. सी. तक की शिक्षा प्राप्त की। तदुपरान्त स्वामी ओ३मानन्द जी सरस्वती के सानिध्य में रहकर सन १९६२-१९७१ तक गुरुकुल झज्जर में रहते हुये अष्टाध्यायी प्राचीन व्याकरण महाभाष्य दर्शनों एवं वेदों का साङ्गो पाङ्ग, अध्यन करते हुये अपने को एक अच्छा विद्वान् बनाने में समर्थ हुये तथा बाद में १९७१ से २०८८ तक गुरुकुल कालवा में रहकर श्रद्धापूर्वक कार्य एवं अध्यापन कार्य करते हुये अनेक बह्मचारिंय को वेदों एवं व्याकरण का विद्वान तजाया। जैसे आचार्य ऋषिपाश्य आचार्य स्वदेश, आचार्य महीपाल, आचार्य अर्जुन देव आदि।

आचार्य बलदेव जी आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक के कई बार प्रधान पद पर रहे और कुछ दिनों तक सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान पद को भी सुशोभित किया।

आचार्य बलदेव जी आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासियों में अद्वितीय थे। आचार्य जी वेदों, व्याकरण, महाभाष्य के अध्यन करने के पश्चात् अपना सम्पूर्ण जीवन वेदों की रक्षार्थ आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया। आर्य समाज के प्रचार प्रसार के लिए उन्हें कभी भूखे भी रहना पडता था तो वह रह जाते थे। वह हमेशा कहा करते थे कि जिस स्वामी दयानन्द ने अपना घर परिवार एवं गाव छोडकर वेदों की रक्षा के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ऐसे महान् संन्यासी के द्वारा स्थापित आर्य समाज की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। यदि हमारेलोग एसा नही करते हैं तो हम धर्म विरोधी है।

स्वामी दयानन्द की तरह आचार्य बलदेव जी ने भी अपना सपूर्ण परिवार, घर जमीन आदि सभी को त्यागकर अपने जीवन को आर्य समाज की रक्षा में लगा दिया और सभी आर्य जनों से कहा कि आर्य समाज हमारी माँ है। इसकी रक्षा करना हमारा परम दायित्व है।

आचार्य बलदेव जी गौ भक्त थे। उन्होंने गौओं की रक्षा पर विशेष बल दिया। उनकी रक्षा के लिये आचार्य गौ रक्षा आंदोलन भी चलाया और उनके समक्ष सरकार को झुकना पड़ा वह सबसे कहा करते थे कि जो मनुष्य गौओं की रक्षा नही करता है। उसे संसार में रहने का कोई अधिकार नही।

गौ माता हमारी संस्कृति की पहचान है। शास्त्रों में वर्णित है कि जो व्यक्ति गौओं की रक्षा नहीं करते है और अपने स्वार्थ सिद्धि करने के लिये गौओं की हत्या करके उनके मांस से अपनी भूख मिटाते है। ऐसे व्यक्तियों को शीशे की गोलियों से उड़ा देना चाहिये अर्थात् मार देना चाहिये। जैसा कि वेदों में वर्णित है।

आचार्य जी का सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल था। वह प्रात: चार बजे उठकर पहले ईश का ध्यान करते थे। तदुपरान्त दैनिक दिन चर्या से निवृत्त होने के पश्चात् स्नानादि कर संध्या यज्ञ हवन आदि करते थे। तत्पश्चात् वेदों का स्वाध्याय करना उनका नित्य का कार्य था। वह सुबह शाम कम से कम दो घंटे अवश्य ही घूमते थे। अर्थात भ्रमण करते थे।

वह आर्य समाज के महान् व्यक्तित्व थे। उन्होने आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं ऋषिवर दयानन्द के सपनों को साकार करने के लिये कई जगहों पर आर्य समाज गुरुकुल तथा गौशालाओं की स्थापना की। कई

बार गौशालाओं के प्रधान पद एवं संरक्षक पद पर भी रहे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया।

वह आर्य समाज के स्तम्भ थे। उनका सम्पूर्ण जीवन त्याग एवं पवित्रता से परिपूर्ण था। उन्होंने अपने जीवन में हिम्मत कभी भी नही हारी। वह हमेशा सबसे कहा करते वो कि जो मनुष्य अपना कल्याण चाहता है, वह वेदों के सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारकर उस पर चलने का प्रयास करे। वह जिस की कार्य को करते थे बड़ी सुझ बुझ के साथ करते थे। वह जहाँ जाते थे वहाँ कहा करते थे कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। जो मनुष्य वेदों के पथपर चलता है। उसका कल्याण हो जाता है। जो मनुष्य वेद विरुद्ध आचरण करता है, वह मनूष्य नही बल्की पशु माना जाता है।

नीतिकार ने लिखा है-

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शील न गुर्णो धर्मः।

ते मर्त्यलोके भूविभार भूताः मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।

अर्थात जिस मनुष्य में न विद्या है न तप है, न ज्ञान है, न शील है, न गुण और न धर्म है। ऐसे मनुष्य इस मृत लोक पर भार रुप में हिरण के समान केवल विचरण कर रहे हैं। ये सभी गुण जिनमें होते हैं। वही मनुष्य होते हैं। शास्त्रों का कथन है- मर्नुभवः अर्थात हम मनुष्य बनें। लेकिन हम मनुष्य न बनकर पशु बन रहे हैं। हम पशुओं की तरह भोगों में फसकर अपना जीवन वर्वादकर रहे हैं। जब कि ऐसा नहीं करना चाहिये।

आचार्य जी का कहना था कि हमलोग ऋषि मुनियों के बताये हुये पदचिह्नों पर चलें। तभी हमारा कल्याण संभव है। वेदों के पथपर चलते हुये प्रतिदिन सुबह शाम कम से कम दो तीन घंटे ईश चिन्तन करता है। वह मनुष्य नही देवता माना जाता है। इस गुणों से युक्त आचार्य बलदेव जी थे। इसलिये वह मनुष्य नही देवता थे।

आचार्य बलदेव जी असाधारण प्रतिभा के व्यक्तित्व थे। उनका सम्पूर्ण जीवन त्यागमय था। आर्य समाज उनके लिये प्राण था। आर्य समाज के प्रचार प्रसार में उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। ऐसे महान व्यक्तित्व संसार में कभी कभी आते हैं। वह वेदों, प्राचीन व्याकरण, महाभाष्य दर्शनों निरूक्त आदि अनेक शास्त्रो के अच्छे विद्वान थे। वह निर्भीकता के पुजारी थे। उन्होंने गौ रक्षा आंदोलन में सरकार को भी झुका दिया। ऐसे महान विभूति को हम कभी नहीं भूल सकते।

वह बहुत निर्भीक थे। वह सत्य के लिए हमेशा अडिग रहते थे। सत्य की रक्षा के लिए हमेशा मर मिटने की तैयार रहते थे।

उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध आवाज उठाने वाले सब लोक आश्रम करोंथा रोहतक के कबीर पंथी महाराज रामपाल को धूल चटा दी। इससे सिद्ध होता है कि आचार्य जी बहुत निर्भीक थे। वास्तव में जो लोग आचार्य जी के मार्ग को अपनायेंगे। उनका जी महान बन जायेगा।

उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी का अहित नही चाहा। सबकी भलाई की, सबका उपकार किया और रुपयों पैसों एवं अन्नों से गरीबों की मदत भी किया। उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन देश सेवा, आर्य समाज की सेवा, धर्म सेवा, एवं परोपकार में लगा दिया। उन्होने गौरक्षा आंदोलन, संस्कृत एवं संस्कृति बचाओ आंदोलन भी किया। इसके अतिरिक्त उन्होनें बाल विवाह छुआछूत, जाति प्रथा एवं स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया। बाल विवाह छुआछूत एवं जाति प्रथा को उन्होने वेद-विरुद्ध बताया। आचार्य जी ने कहा कि स्त्रियों को भी वेद शास्त्र पढ़ने का अधिकार है, जैसा कि शास्त्रों गार्गी जैसी विदुषी का प्रमाण भी मिलता है। आचार्य जी एक धर्मोद्धारक परोपकारी, न्यायप्रिय, सत्यवादी, स्वामी दयानन्द के अनन्य भक्त समाज सेवी, राष्ट्र भक्त, धर्म भक्त एवं कर्म योगी संत थे। ऐसे महा मानव को मेरा शत शत प्रणाम है। लेखक कविता के माध्यम से प्रस्तुत करता है-

जबतक सूरज चांद रहेगा। बलदेव जी का नाम रहेगा।।
उनको कभी नहीं भूलेंगे। सारा जग उन्हें याद करेंगा।।
वेदों के पथपर चलना। उनका नित्य काम था।।
बलदेव जी का दुनियाँ में, बहुत बडा नाम था।।
ज्ञान की गंगा दिल में बहाई। वेदों की ज्योति जग में जलाई।।
श्री बलदेव जी ज्ञानी परोपकारी थे। ब्रह्मचारी और सदाचारी थे।।
स्वामी दयानन्द के सच्चे भक्त थे। गौ भक्त राष्ट्रवादी और ईश-भक्त थे।।
व्याकरण के सूर्य और विद्वान थे। समाज सुधारक और इन्सान थे।।
आचार्य बलदेव जी को मेरा प्रणाम है। आज उनका भुवन में बड़ा नाम है।।
उन्होने वेदों के पथपर चलना सिखाया। संध्या और हवन करना बताया।।

आचार्य बलदेव जी एक कर्मयोगी सत थे। कर्म करना ही मनुष्य का असली जीवन है। जो मनुष्य कर्म करने से डरता है। वह मनुष्य अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता वेदमंत्र स्पष्ट करता है-

कुर्वन्नवेह कर्माणि जिजीविशेषतं समा.
एवं त्वयि नान्यथे तोंडस्ति न कर्म लिख्यते नरे।।

यह मंत्र स्पष्ट करता है कि मनुष्य को शुभकर्म करता हुआ सौ वर्षों तक जीने की इच्छा रखनी चाहिये। जो मनुष्य अपने जीवनशुभ कर्म करता है। उसका परिणाम सदा शुभ ही होता है। कर्म करने वाला मनुष्य ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर पाता है। जो मनुष्य केवल भाग्य भरोंसे रहता है और कर्म करना नही चाहता है। यह अपने जीवन में कुछ नहीं कर सकता। ऐंसे मनुष्य का जीवन हमेशा क्रन्दन करता रहता है। मनुष्य जीवन में कर्म ही सब कुछ है। कर्म करने वाला व्यक्ति ही आगे बढता है। आचार्य बलदेव जी का भी यही कथन था कि हे मनुष्य। तुम केवल कर्म करो और फल की चिन्ता मत करो। जो मनुष्य जैसा कर्म करता है परमात्मा उसे वैसा फल देता है।

दिनांक २८ जनवरी २०१६ ई. को दयानन्द मठ रोहतक में लगभग ६ बजे सुबह अकस्मात् उनकी मृत्यु हो गई। उनके निधन का समाचार सुनते ही सम्पूर्ण आर्य जगत स्तब्ध रह गया। आचार्य बलदेव जी के जाने से आर्य जगत को जो झटका लगा, अर्थात आर्य जगत को जो क्षति हुई उसकी पूर्ति होना असंभव है। आचार्य जी ने आर्य समाज के हितार्थ जो कार्य किया। उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे महान् आत्मा को मेरा शत शत नमन है।

डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री ''सोम''

उसके प्रकाश के लिए अपने-आपको खाली कर लो

- आचार्य प्रियव्रत

यस्ते शोकाय तन्वं रिरेच
क्षरद्धिरण्य शुचयोऽनु स्वाः।
अत्रा दधेते अमृतानि नामा-
स्मे वस्त्राणि विश एरयन्तानम् ।।३।।

अर्थ- हे वरणीय प्रभो ! **(यः)** जो पुरुष **(ते)** तुम्हारे **(शोकाय)** प्रकाश की प्राप्ति के लिए **(तन्वम्)** अपने शरीर को **(रिरेच)** दोषों से खाली कर लेता है और सद्गुणों से तथा आपसे जोड़ लेता है, जिससे कि उसके शरीर से **(हिरण्यम्)** सुवर्ण **(क्षरत्)** प्रवाहित हो, और **(स्वाः)** उसके अपने लोग **(अनु)** उसका अनुकरण करके **(शुचयः)** पवित्र बन जाएँ, **(अत्र)** ऐसे पुरूष में **(अमृतानि)** अमर **(नामा)** नामों को **(दधेते)** प्रजा के स्त्री और पुरष रख देते हैं, और **(अस्मै)** ऐसे पुरूष के लिए **(विशः)** प्रजाएँ **(वस्त्राणि)** वस्त्रों को (आई, **रयन्ता**) सब ओर से लाती हैं।

प्रस्तुत मन्त्र में वरणीय भगवान की महिमा का वर्णन एक निराले ढ़ंग में किया गया है। जो लोग भगवान के भक्त बन जाते हैं, उनकी क्या अवस्था हो जाती है इसका इस मन्त्र में वर्णन किया गया है। भक्तों की अवस्था का वर्णन करके भगवान की महिमा का वर्णन कर दिया गया है। इसी प्रसङ्ग में प्रभु के उपासकों को कई सुन्दर उपदेश भी कर दिये हैं। मन्त्र के पदों को गम्भीरता से विचारने पर मन्त्र का यह सब सुन्दर भाव बड़ा स्पष्ट हो जाता है।

मन्त्र के प्रथम चरण में प्रभु की उपासना के फल और उसके साधन की ओर संकेत किया गया है। प्रभु की उपासना और भक्ति का फल है प्रभु के प्रकाश को प्राप्त करना। उपासक जब अपने शरीर का रेचन कर लेता है तब उसे प्रभु का प्रकाश प्राप्त होता है। रेचन के दो अर्थ होते हैं। एक खाली करना, पृथक् करना और दूसरा सम्बन्ध जोड़ना। मन्त्र में रेचन के लिए ''रिरेच'' क्रियापद का प्रयोग हुआ है। यह क्रियापद दो धातुओं से बन सकता है। एक ''रिचिर'' धातु से। इस धातु का अर्थ विरेचन या खाली करना होता है। दूसरे ''रिच'' धातु से। इस धातु का अर्थ वियोग, अर्थात् पृथक् करना और सम्पर्चन, अर्थात् सम्बन्ध जोड़ना होता है, इसलिए ''रिरेच'' इस क्रियापद का समुदित अर्थ हमने खाली करना, पृथक् करना और सम्बन्ध जोड़न ऐसा कर दिया है। इस आध्यात्मिक प्रकरण में खाली करने और सम्बन्ध जोड़ने का भाव स्वयं ही स्पष्ट हो जाता है। दोषों से, बुराइयों से, सब प्रकार के पापों से, हमने अपने शरीर को खाली करना है, सब अनाचारों से हमने उस पृथक् रखना है। सद्गुणों से, भलाइयों से, सब प्रकार के पुण्याचरणों से हमने उसका सम्बन्ध जोड़ना है। दोषों से दूर रहने और सद्गुणों से युक्त रहने में सहायता की प्राप्ति के लिए हमने अपने शरीर का भगवान् से भी सम्बन्ध जोड़ना है। उसकी भी उपासना करनी है। दोषों के त्यागने, गुणों के ग्रहण करने और भगवान् की उपासना करने का सम्बन्ध वास्तव में तो आत्मा के साथ है, शरीर के साथ नहीं। आत्मा ही यह सब-कुछ कर सकता है, शरीर नहीं, परन्तु क्योंकि आत्मा शरीर में रह कर ही यह सब-कुछ करता है, शरीर आत्मा का प्रधान साधन है, इसलिए यहाँ मन्त्र में आत्मा या जीवन के लिए शरीर के वाचक ''तनू'' शब्द का प्रयोग कर दिया गया है। जब हम अपने जीवन का रेचन कर लेते हैं- उसे पापों से पृथक और पुण्याचरणों से युक्त कर लेते हैं तथा प्रभु के साथ भी उसका सम्बन्ध जोड़ लेते हैं।- तब हमें भगवान् का प्रकाश प्राप्त होता है। जिस आत्मा ने बुराइयों का विरेचन करके अपने को खाली कर लिया है उसी में भगवान् का प्रकाश भर सकता है।

फिर भगवान् का यह प्रकाश प्राप्त कर लेने पर क्या होता है? इसका उत्तर मन्त्र के दूसरे चरण में दिया गया है। इस चरण में कहा गया है कि भगवान् का प्रकाश इसलिए प्राप्त किया जाता है कि उससे उपासक के शरीर में से हिरण्य प्रवाहित होने लग पड़े और उसके अपने लोग उसका अनुकरण करके पवित्र बन जाएँ। जिसे भगवान् का प्रकाश मिल जाता है उसके शरीर में से हिरण्य बहने लगता है। हिरण्य का प्रसिद्ध अर्थ सुवर्ण होता हैं। यहाँ सुवर्ण शब्द सुवर्ण-जैसी कान्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है। जिस उपासक को भगवान् से प्रकाश प्राप्त हो जाता है उसकी काया कुन्दन-सी दमकने लगती है। वह सुवर्ण-सा तेजस्वी और आभावान् हो जाता है। हिरण्य का शब्दार्थ हितकारी और रमणीय होता है। प्रभु का प्रकाश प्राप्त कर लेनेवाले व्यक्ति का जीवन हितकारी और रमणीय हो जाता है। आचरण प्राणिमात्र के लिए हितकारी और रमणीय हो जाते हैं। उसके सुन्दर आचरणों से सबका भला होता है। उसके जीवन में से उपकार का सुन्दर झरना क्षरित होता रहता है- परोपकारवृत्ति की गङ्गा उसके जीवन में से प्रवाहित होती रहती है।

साथ ही जिसे भगवान् का प्रकाश प्राप्त हो जाता है वह अकेले अपने जीवन को ही पवित्र बनाकर सन्तुष्ट नहीं रह जाता। वह तो भगवान् का प्रकाश इसलिए प्राप्त करता है कि उससे अपने जीवन को पवित्र बनाकर उसके द्वारा अपने से सम्बन्ध रखनेवाले लोगों को भी पवित्र बना डाले। वह स्वयं शुचि होकर अपनी शुचिता से अपने से सम्बन्ध रखनेवाले अन्य लोगों को भी शुचि बनाने का प्रयत्न करता है। वह अपने जीवन को अनुकरण करने योग्य शुचि बनाता है। उसके अनुकरण से दूसरे लोग शुचि बनते हैं। प्रभु से प्रकाश प्राप्त ऐसा व्यक्ति अपने समीपस्थ सम्बन्धी लोगों को तो अपना समझता ही है, वह समीपस्थ सम्बन्धियों से, बाहर के लोगों को भी अपना ही समझता है, क्योंकि सभी मनुष्य इस अमर परमात्मा के अमृत पुत्र हैं और इसलिए सब उसके भाई हैं, सब उसके अपने हैं। वह किसे पराया कहेगा? उसके लिए तो कोई भी पराया नहीं है। सब उसके अपने हैं, इसलिए वह सभी को अपने उपदेश और अनुकरणीय जीवन से शुचि-पवित्र बनाने का निरन्तर प्रयत्न करता रहता है।

मन्त्र के इस प्रसङ्ग से यह स्पष्ट ध्वनित होता है कि प्रभु के उपासक को अपने ही लाभ और उन्नति में तत्पर नहीं रहना चाहिए। उसे आप उन्नत होकर औरों को भी उन्नत करना चाहिए। प्रभु-भक्ति की यह कसौटी है कि अपने को प्रभु-भक्त कहनेवाला व्यक्ति अपने आस-पास के लोगों को उन्नत करने

का कितना उद्योग करता है। मन्त्र के इस चरण में प्रयुक्त ''अनु'' पद की ध्वनि को भी सदा ध्यान में रखना चाहिए। हम जिन्हें पवित्र बनाना चाहते हैं वे हमारे अनुकरण से पवित्र होते हैं। हमें अपना जीवन अनुकरणीय रूप से उन्नत और पवित्र बनाना चाहिए। उसका लोगों को उन्नत और पवित्र करने में बड़ा प्रभाव होगा। हमारे उपदेश और व्याख्यान इतना प्रभाव नहीं डालते, जितना हमारा जीवन प्रभाव डालता है। हमारे अपने जीवन की पवित्रता दूसरों के जीवन को पवित्र बनाने में जादू का-सा असर करेगी। सुधारक और उपदेष्टा को सदा इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

जो व्यक्ति इस प्रकार प्रभु का प्रकाश अपने जीवनों में धारण करके कान्तिमान् बन जाते हैं और सदा दूसरों के भले के लिये सुन्दर काम करते रहते हैं तथा अपने जीवन की अनुकरणीय पवित्रता से अन्य लोगों को पवित्र बनाने में अपने जीवनों को लगाते रहते हैं, उन्हें क्या मिलता है? मन्त्र के उत्तरार्द्ध में इसका उत्तर दिया गया है। प्रजा के स्त्री और पुरुष ऐसे लोगों को अमर नाम प्रदान कर देते हैं। लोग ऐसे पुरुषों के नामों को कभी मरने नहीं देते। उनके नामों को अमर रखते हैं। उनके नामों के सदा गीत गाये जाते हैं। आनेवाली सन्ततियाँ उन्हें सदा स्मरण रखती हैं। उनके इतिहास सदा याद रक्खे जाते हैं। वे मर भी जाते हैं, फिर भी लोगों की स्मृति में सदा अमर रहते हैं। वे मर्त्य होकर भी अमर हो जाते हैं। मन्त्र में प्रयुक्त ''दधेते'' क्रिया के द्विवचन के आधार पर हमने अर्थ में स्त्री और पुरुष इस द्वन्द्व का अध्याहार कर लिया है। इसके अतिरिक्त प्रजाजन उनके लिए सब ओर से वस्त्रों को लाते रहते हैं। वस्त्र का सामान्य अर्थ शरीर को ढ़कनेवाले कपड़े होता है। इस शब्द का यौगिक अर्थ केवल ढ़कनेवाला होता है। जो भी वस्तु हमारी किसी आवश्यकता को ढ़कती है- पूरा करती है, वह वस्तु उस आवश्यकता के लिए वस्त्र है। मन्त्र का वस्त्र शब्द हमारी सभी प्रकार की आवश्यकताओं का उपलक्षण है। मन्त्र के इस कथन का तात्पर्य यह है कि ऐसे प्रभु से प्रकाशप्राप्त परोपकारैकव्रती पवित्र पुरुषों की वस्त्र आदि की सभी आवश्यकताओं को प्रजाजन पूरा करते रहते हैं। उन्हें किसी प्रकार की वैध आवश्यकता की पूर्ति न हो सकने के कारण होनेवाला कष्ट नहीं भोगना पड़ता। उनकी सब उचित आवश्यकताएँ पूरी होती रहती हैं। प्रजाजन उनकी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति करने के लिए सदा उद्यत रहते हैं और इसमें अपना अहोभाग्य समझते हैं।

प्रभु की शरण में जानेवाले की यह महिमा हो जाती है।

हे मेरे आत्मन्! यदि तुम भी चाहते हो कि तुम मर्त्य होकर भी अमर हो जाओ तो तुम भी उस वरणीय प्रभु की शरण में जाकर उसका प्रकाश प्राप्त करो और उस प्रकाश को अन्य लोगों तक पहुँचाने में लग जाओ। यही अमरपद प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग है।

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में आर्य समाज वाशी द्वारा आयोजित

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिन व पं. लेखराम बलिदान दिवस का आयोजन

रविवार दिनांक २८-०२-२०१६ को महाराष्ट्र नैसर्गिक पार्क, सायन-धारावी, मुम्बई में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिन व पं. लेखराम बलिदान दिवस का आयोजन तथा सभी समाजों की सामूहिक पिकनिक को बडे ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मुम्बई के सभी समाजों ने एक छत के नीचे एकत्रित होकर एकता का परिचय दिया। सभी समाजों के सदस्यों ने महर्षि दयानन्द सरस्वती व पं. लेखरामजी की स्तुति में भजन प्रस्तुत किये। आर्य भजनोपदेशक श्री प्रभाकर गुप्त व श्री वीरेन्द्र मिश्र के सुमधुर भजनों से वातावरण आहलादित हो उठा। इस अवसर पर अचार्य वीरेन्द्र अलंकार, सोनीपत, हरियाणा को उनके लेखन कार्य के लिए पच्चीस हजार की धनराशि तथा शाल, श्रीफल, व प्रशस्ती पत्र देकर सम्मानित किया गया। आर्य प्रतिनिधी सभा मुम्बई की ओर से श्री मिठाई लाल सिंह, श्री अरुण अबरोल, श्री वेद प्रकाश गर्ग, श्री त्रिलोक चन्द अग्रवाल, श्री प्रभूभाई वेलाणी, श्री ओम प्रकाश शुक्ला व डॉ. जिलेसिंह चौधरी ने मंच की शोभा बढाई। श्री राजकुमार भगवती प्रसाद गुप्त ने कार्यक्रम का संचालन किया। सभी समाजों के सहयोग से यह कार्यक्रम काफी सफल रहा।

राजकुमार भ. गुप्ता
मंत्री, आर्य समाज वाशी

नाल्पे सुखमस्ति

- प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

हम सब दु:खी हैं, अमीर भी दु:खी हैं, गरीब भी दु:खी हैं, शायद अमीर गरीबों से ज्यादा दु:खी हैं। गरीब तो दु:खी हैं ही क्योंकि उनका जीवन अभावग्रस्त है। उनके पास रहने को मकान नहीं, पहनने को कपड़ा नहीं, खाने को अनाज नहीं। जब अमीर देखता है कि उसके पास एक मकान है, उसके पड़ोसी के पास दो मकान हैं, तो वह ईर्ष्या से जल उठता है, सोचता है उसके पास भी दो मकान क्यों नहीं? जब अमीर देखता है कि उसके पास पर्याप्त वस्त्र हैं पर उसके पड़ोसी की बीबी के पास मिंक-कोट है तब उसका कलेजा जल उठता है। वह यही नहीं सोच सकता कि उसकी बीबी के पास भी मिंक-कोट हो, बल्कि धोखाधड़ी के उपाय भी सोचने लगता है कि कैसे इसे प्राप्त किया जा सकता है? जब अमीर देखता है कि उसके पड़ोसी के यहाँ रोज शराब की बोतलें उड़ती हैं तब वह भी सोचने लगता है कि पड़ोसी की अपेक्षा इतना अधिक धन कमा ले कि उसके यहाँ दिन-रात कॉकटेल पार्टियाँ होती रहें। अस्ल बात तो यह है कि हम गरीब इसलिए नहीं हैं कि हम वास्तविक अर्थों में गरीब हैं; हम गरीब इसलिए हैं क्योंकि दूसरे हमसे ज्यादा अमीर है। हम अपनी अमीरी की तरफ नहीं देखते, दूसरों की अमीरी को देखकर अपने को गरीब समझते ही नहीं मानने भी लगते हैं। इसलिए हमने कहा कि गरीब तो दु:खी है ही, अमीर उनसे ज्यादा दु:खी है, क्योंकि अमीर होते हुए भी अपने को उनकी तुलना में गरीब ही समझते हैं।

अमीरी-गरीबी की बातें छोड़ दें, दु:ख-सुख की भी यही बात है। हम सब तरह से सुखी हैं, परन्तु जब दूसरे को अपने से ज्यादा सुखी देखते हैं तब सुखी होते हुए भी दु:खी हो जाते हैं, अपने सुख को भी दु:ख मानने लगते हैं- हाय, यह हमसे ज्यादा सुखी क्यों है? दु:खी को देखकर उसके प्रति सद्भावना नहीं होती, यही मन होता है कि भगवान् की हम पर कितनी कृपा है कि यह हमसे ज्यादा दु:खी है। मैं एक बीमार को देखकर आ रहा था। वह शैयारूढ़ था, चल-फिर भी नहीं सकता था, देर से बीमार था, अब चला कि तब चला की फिक्र हो रही थी। उसके एक मित्र मुझे उनके घर के बाहर मिले। वे भी लँगड़ाते चल रहे थे। इतना जबर्दस्त आर्थ राइटिस था कि लाठी लेकर भी चलना मुश्किल हो रहा था। मुझसे पूछने लगे- हमारे दोस्त का क्या हाल है? मैंने कहा- अच्छा नहीं। झट से बोले, भगवान् कृपा करेंगे! परन्तु उनके दयाभाव से टपकता था कि उनके दोस्त चल बसें तो ठीक है। हम बाहर से दया दिखाते हैं, भीतर से निर्दयी होते हैं। इसलिए हमने कहा कि दु:खी दूसरे के दु:ख को देखकर सुखी और सुख को देखकर दु:खी रहता है।

हम अमीरी चाहते हैं तो शिखर की, सुख चाहते हैं तो बेअन्त, बीच में रूकना हम नहीं जानते। बीच में रूकने का अर्थ है- 'अल्प' में सन्तुष्ट हो जाना, जो-कुछ मिला है उस तक को तो भगवान् की सिर्फ कृपा समझना। भगवान् ने जितना हमें दिया है उतना हमारे लिए काफी नहीं है- हमें और चाहिए, और चाहिए, इसीलिए चोरियाँ होती हैं, डाके डलते हैं, लूट होती है, समाज का कड़ाहा हर समय उबलता रहता है। कोई टिककर, शान्त-भाव से नहीं बैठता-अमीर भी, गरीब भी, सुखी भी, दु:खी भी। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। चैन, सुख-शान्ति से कोई नहीं बैठा। भौतिकवाद के तीन पक्ष हैं- पहला, दूसरा तथा तीसरा। ये तीन पक्ष क्या है?

भौतिकवाद का पहला पक्ष तो यह है कि व्यक्ति को थोड़े में सन्तोष नहीं होता, अधिक-से-अधिक की चाह बनी रहती है। जितना हमें मिले, उससे ज्यादा चाहिए। धन जितना मिलता है उससे ज्यादा की चाह बनी रहती हैं, सुख जितना मिलता है उससे ज्यादा की चाह बनी रहती है, इसके साथ ही हमें जितना मिलता है दूसरे को उससे कम मिले, धन हो या सुख हो, दोनों दूसरे को हमसे कम मिलें। इन दोनों बातों का एक ही अर्थ है। अपने को दूसरे से ज्यादा मिले, दूसरे को हमसे कम मिले।

भौतिकवाद का दूसरा पक्ष यह है कि यद्यपि मनुष्य अल्प से सन्तुष्ट नहीं होता, अधिक-से-अधिक ही चाहता है, तो भी जो भौतिक है वह अन्ततोगत्वा सदा अल्प हो जाता है। धन कितना भी हो, वह कहने को भले ही बेअन्त कहा जाय, परन्तु होता वह सान्त है, नपा-तुला है। ऐसा धन नहीं हो सकता जिसका कहीं खात्मा ही न हो। मैं जयपुर गया। वहाँ राजाओं के महल देखे, पुराने किले देखे। जब बने थे कितने महान, कितने विशाल थे! देखनेवालों की आँखें फट जाती होंगी। वहाँ राजा-रानियाँ रहती थीं। अब वहाँ जा सकना भी सम्भव नहीं है। आज वे अनन्त धन-राशि से बने महल तथा किले निरे मट्टी हो गये हैं। उल्लू भी वहाँ नहीं बोलते। भौतिक सुख-दु:ख का भी यही हाल है। कोई भौतिक सुख चिरस्थायी नहीं है, कोई भौतिक दु:ख भी चिरस्थायी नहीं हैं।

भौतिकवाद का तीसरा पक्ष यह है कि इसमें हर बात की प्रतिक्रिया होती है। शराब पीते हैं, मजा आता है, फिर और पीते हैं, फिर लत पड़ जाती है, लत पड़ते-पड़ते शराब पीनेवाला शराब को नहीं पीता, शराब उसे पीने लगती है। यह शराब पीने की प्रतिक्रिया है। पहले चित्त उभरा था, अब प्रतिक्रिया के रूप में चित्त गिरने लगता है। सुख पाने के लिए हम चले थे, थोड़े सुख से तो सन्तोष नहीं होता- 'नाल्पे सुखमस्ति'- 'अल्प' सुख देनेवाली वस्तु से तो पेट भरता नहीं, और-और की लालसा हमें सांसारिक भोगों में आगे-आगे धकेलती चलती है, और स्थिति वह आ पहुँचती है जिसमें जितना सुख हमें मिलता था वह तो मिलने से रहा, उलटा दु:ख सामने आ खड़ा हुआ। किसी को शराब पीने से दिल का दौरा पड़ने लगा, किसी ने जो-कुछ जोड़ा था वह लुटा दिया, कोई सड़कों या गलियों में भिखमंगों का-सा होकर जीवन से हाथ धो बैठा। भौतिकवाद की प्रतिक्रिया को सममझने के लिए ऐलोपैथिक औषधियों की प्रतिक्रिया को समझ लेने से बात समझ पड़ जायेगी। नींद की गोली खाकर सोने की प्रतिक्रिया में कब्ज हो जायेगी। कब्ज के लिए दस्तावर दवा लेंगे तो कमजोरी हो जायगी। दिनोंदिन अखबारों में पढ़ते हैं कि अमुक रोग की अमुक अचूक दवा, जिसके बिना ऐलोपैथिक इलाज चल ही नहीं सकता था, प्रतिक्रिया करने लगी है, अब वह दवा लेना हानिकर है। समय था जब विटामिनों के लिए कहा जाता था कि वे प्राण-प्रद हैं, अब उनके लिए भी कहा जाने लगा है कि इनकी भी प्रतिक्रिया होती है। भौतिक वाद का नियम ही प्रतिक्रिया है।

भौतिकवादी जीवन में तीन बातों को स्मरण रखना चाहिए- पहली

बात यह कि हममें और-और की चाह सदा बनी रहती है, जितना मिलता है उससे अधिक की चाह के बने रहने से जीवन में से सन्तोष सदा के लिए विदा ले लेता है; दूसरी बात यह कि भौतिकवाद से जो मिलता है वह अन्त तक टिकनेवाला नहीं होता, समय आता है जब सब किया-कराया हाथ से निकल जाता है; तीसरी बात यह कि भौतिकवादी जीवन की हर बात की प्रतिक्रिया होती है, जिस बात के पीछे हम पड़े हैं वह हाथ तो आती है, परन्तु ठीक उससे उलटी वस्तु हाथ में रह जाती है।

तो फिर प्रश्न उठता है कि अगर भौतिकवाद में पूर्णता नहीं, सदात्व नहीं, प्रतिक्रिया है, तो वह कौन-सा रास्ता है जिस में पूर्णता हो, सदात्व हो और जिसमें प्रतिक्रिया न हो? सन्तों का कहना कहै कि वह अध्यात्मवाद का रास्ता है।

अध्यात्मवाद का रास्ता क्या है? यह समझ लेना कि अशान्ति बाहर नही है, हमारे मन में है, हमारे भीतर है, यही समझ लेना शान्ति का रास्ता है, यही अध्यात्म का रास्ता है। हम दूसरों से डाह करते हैं। हमें अशान्ति इसलिए नहीं कि हमारे पास किसी चीज की कमी है, हम अशान्त इसलिए रहते हैं कि दूसरों के पास हमसे अधिक क्यों है? हमारे पास एक मकान है, एक मोटर है, परन्तु हम इसलिए अशान्त रहते हैं क्योंकि दूसरे के पास दो मकान हैं, दो मोटरें हैं। बाह्य पदार्थो के साथ चिपट जाने से अशान्ति आती है, उनसे अपने को अलग कर लेने से शान्ति आती है क्योंकि शान्ति-अशान्ति का स्रोत भीतर है जो बाहर के शान्त-अशान्त संसार के साथ एकत्व-भाव से जुड़ा है। उससे अपने को काट लेने पर भीतर तो शान्ति का स्रोत ही बहता रह जाता है; उसमें तुलना नहीं, अपूर्णता नहीं, न्यूनाधिकता नहीं। न्यूनाधिकता बाहर की वस्तुओं में है, जो किसी के पास कम हैं, किसी के पास ज्यादा हैं। हमने इन बाह्य वस्तुओं के साथ अपनी एकात्मता बनाई हुई है यद्यपि ये उपकरण हैं, हमारे साधन हैं। जब हम इनसे साधन का काम नहीं लेते तब इनका होना-न होना एक-समान है। तभी तक आकांक्षा का विषय बना रहता है जब तक वह हमारे उपयोग का साधन है। बड़े-से-बड़ा महल तभी तक मकान या महल है जब तक उसका कोई उपभोग करता है; जहाँ उसका उपभोग छूटा वह मट्‌टी से भी बदतर हो जाता है; मोटर तभी तक स्पृहणीय है जबतक वह हमारे यातायात का साधन है, अन्यथा गराज में ही पड़ी रहेनेवाली मोटर किस काम की? हम विषयासक्त हैं, विषय हमारे वश में नहीं, हम विषयों के वश में पड़े हुए हैं- इसीलिए अशान्ति है। इस गुर को समझ लेना ही अध्यात्मवाद है। जैसे हमारा जीवन अशान्त है, इसी प्रकार के एक अशान्त व्यक्ति को एक सन्त ने पूछा- 'तुम्हें क्या चाहिये? ऐसा वरदान दूंगा कि जो चाहोगे वह हो जायगा। परन्तु शर्त एक रहेगी- जो तुम चाहोगे वह तो हो जायगा, परन्तु तुम्हारे पड़ोसी के पास उससे दुगुना हो जायगा।' खैर, उसके पास अपना कोई मकान नहीं था, उसने चाहा कि उसका मकान बन जाये; मकान बन गया परन्तु उसके पड़ोसी के दो मकान बन गये। फिर उसने चाहा कि उसे मोटर मिल जाय; वह मिल गई, परन्तु उसके पड़ोसी को दो मोटरें मिल गई। यह देखकर उस व्यक्ति की अशान्ति इतनी बढ़ गई कि उसने माँगा कि उसके मकान में एक कुआँ खुद जाय ताकि उसके पड़ोसी के मकान में दो कुएँ खुद जायें। तब जाकर उसे कुछ राहत मिली क्योंकि उसने देखा कि उसके पड़ोसी के मकान में दो कुओं के कारण चलने-फिरने की जगह भी न रही।

हमारे भीतर संसार भरा हुआ है- संसार की हर वस्तु, हर वस्तु की लालसा। जब तक इस लालसा को निकाल नहीं दिया जायगा तबतक शान्ति भीतर प्रवेश नहीं कर सकती, क्योंकि अशान्ति का मूल कारण लालसा है। यही हमारे जीवन की बेचैनी का कारण है। अगर घड़े में भूसा भरा हुआ हो, और हमने उसमें पानी भरना हो तो भूसे को निकाल बाहर फेकना होगा। पहले भूसा निकलेगा, तब पानी भरेगा; पहले पानी भरे तब भूसा निकले- ऐसा नहीं होगा। अध्यात्म का तरीका यही है कि मनुष्य ध्यान में बैंठे, संसारी बातें याद आयेंगी, परन्तु अगर घड़े के भीतर पानी डालते चले जायें तो भूसा अपने आप निकलता चला जायगा और घड़ा भूसे से खाली होकर पानी से भर जायेगा। साँप टेढ़ा चलता है, परन्तु अपने बिल में प्रवेश करते समय सीधा होकर जाता है। इसी तरह मनुष्य संसार के विषयों में फँसा-फँसा कुटिलता, दगा-फरेब बरतता है, परन्तु जब उसे अध्यात्म की लगन लग जाती है तब कुटिलाता छोड़ देता है क्योंकि भगवान् का ध्यान ही उसका घर है। हमारी हालत यह है कि हम विषयों की तरफ अन्धाधुन्ध भागे चले जा रहे हैं। इसका अन्त क्या होगा- इसे कोई नहीं सोचता । जैसे कोई चोर-चोर कहकर भागने लगे तो सब चोर-चोर कहकर भागने लगते है, जिन्होंने चोर को देखा नहीं वे भी चोर-चोर कहकर भागने लगते हैं, वैसे हम भी संसार के विषयों के प्रति अन्धाधुन्ध भाग रहे हैं क्योंकि दुनिया के सब लोग विषयों की तरफ भाग रहे हैं और सारा जीवन इसी भाग-दौड़ में बिता देते हैं। अन्त समय में हम देखते है कि हाथ कुछ लगा नहीं, सारी दौड़ बेकार थी। उस समय बन्धु-बान्धव, स्त्री, पुत्र-कलत्र भी थककर चाहने लगते है कि यह हमसे जल्दी-से जल्दी विदा हो। अध्यात्म का अर्थ है- जीवन के इस अन्त को देख लेना।

एक साधु के पास एक व्यक्ति गया और हाथ दिखाकर कहने लगा- मेरा हाथ देखिये, मेरे भाग्य में क्या लिखा है? साधु ने कहा - मैं हाथ देखना नहीं जानता। परन्तु वह व्यक्ति तो साधू के पीछे पड़ गया- यह कैसे हो सकता है कि इतने बड़े महात्मा होकर आप हस्त-रेखाओं के फल को न जानते हों? साधु ने जब छुटकारा न देखा तब उसके गले में एक तागा बाँध दिया और कहा कि जब यह तागा टूट जायगा तब तुम्हारी मृत्यु होगी। अब वह रोज सवेरे उठकर गले का तागा देख लेता और समझता कि जिन्दा हूँ। एक दिन अचानक तागा टूट गया। अब वह पड़े-पड़े चिल्लाने लगा कि मैं मर गया हूँ। लोग हँसते, परन्तु वह चिल्लाता कि मैं मरा पड़ा हूँ, मुझे कोई उठाने नहीं आया। हमारा यह शरीर एक तागा है। जब यह टूट जाता है, हम समझते हैं- हम मर गये, परन्तु शास्त्रों का कथन है कि हम मरते नहीं, मरता यह शरीर है, टूटता यह तागा है; आत्मा अमर है, चिन्ता करनी हो तो उसकी करो जो सम्पूर्ण है, अमर है, अनादि है, अनन्त है- यही अध्यात्मवाद है, इसी से शान्ति मिल सकती है क्योंकि अध्यात्म में जो शान्ति मिलती है वह अल्प नहीं, अनल्प है, वही 'भूमा' है- **'यो वै भूमा तत्सुखम्'।**

आज सब चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि चारों तरफ बढ़ोतरी हो रही है। हर बात में बढ़ोतरी है, उन्नति है, परन्तु क्या यह बात भी ठीक नहीं कि अशान्ति, असन्तोष, ईर्ष्या-द्वेष, लड़ाई-झगड़े में भी बढ़ोतरी हो रही है? शान्ति की तलाश में हर व्यक्ति अशान्त है, सुख की तलाश में हर व्यक्ति दुःखी है, सब-कुछ पा लेने की तलाश में हर व्यक्ति सब-कुछ खो बैठा है।

धर्म जाति भेद नहीं सिखाता
''आर्य समाज संगठन जन्मा जातिवाद का विरोधी है, पोषक नही। क्या? वर्तमान में प्रचलित जातियों का प्रचलन उचित है? एक विवेचन?''

पं. उम्मेदसिंह विशारद
मो. : 94115 12019

सृष्टि प्रारम्भ से महाभारत युद्धकाल तक मानव समाज में गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था थी, और समाज में जाति पाति, छुआछूत, उँच-नीच का प्रचलन नही था महाभारत युद्ध के उपरान्त वैदिक व्यवस्था व संस्कार न्यून होने के कारण वर्ण व्यवस्था का स्थान जन्मना जाति व्यवस्था ने ले लिया। और परस्पर एक जाति दूसरी जाति से घृणा द्वेष करके भयंकर नर संहार होने लगे, और समाज में वैदिक संस्कारों का प्रचलन, वैदिक धर्म मान्यता, तथा सत्य ईश्वर की जगह मनुष्य की शक्ल वाली बुतों की पूजा ने स्थान ले लिया। परिणामस्वरुप समाज में अनेक विषमताओं ने जन्म ले लिया।

ईश्वर की कृपा से १८वीं शताब्दी में देव पुरुष महर्षि दयानन्द जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना की गई और आर्य समाज ने तमाम धार्मिक सामाजिक, व राजनैतिक कुरुतियों के उन्मूलन हेतु कमर कसी। और तमाम चुनौतियों को स्वीकार करके समाज को एक नयी दिशा प्रदान की और कर रहा है।

वर्णो की परिभाषा :-

''ब्राह्मणोस्य मुखमासीद बाहू राजन्यः कृतः
उरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्यां शूद्रो अजायत (यजुर्वेद)''..

अर्थात् (सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थसम्मुलास से) जो पूर्ण व्यापक परमात्मा की सृष्टि में मुख के सदृश सबमें मुख्य उत्तम हो, वह ब्राह्मण और (बाहुवैबल बाहुवैंवीर्यम) बल वीर्य का नाम बाहू है वह जिसमें अधिक हो सो (राजन्यः) क्षत्रिय (उरु) कटि के अधोभाग और जानू उपस्थित भाग का नाम है, जो सब देशों में उरू के बल से जावे आवे प्रवेश करे वह वैश्य और जो पग के नीच अंग के सदृश मूर्खतादि गुण वाला हो वह शूद्र है।

''शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम ।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्चात थैव च ।। मनुः।।''

जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के सदृश गुण वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाये। वैसे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य के कुल मे उत्पन्न हुए शूद्र के सदृश्य हो तो शूद्र हो जायें। वैसे ही क्षत्रिय वैश्य के कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण व शूद्र के समान होने से ब्राह्मण व शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाते हैं। अर्थात् चारों वर्णों में जिस-जिस वर्ण के सदृश जो-जो पुरूष व स्त्री हो वह-वह उसी वर्ण में गिने जावें।

धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तमवर्ण को प्राप्त होता है और उसी वर्ण में गिना जावे कि जिस-जिस के योग्य होवे। वैसे अधर्माचरण से पूर्व-पूर्व अर्थात् उत्तम-उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे वाले वर्णों को प्राप्त होता है और उसी वर्ण नें गिना जावे। जैसे पुरूष जिस-जिस वर्ण के योग्य होता है वैसे ही स्त्रियों की भी व्यवस्था समझनी चाहिये। इससे सिद्ध हुआ चारों वर्णों को अपने से उत्तम व नीचे वर्णों में अपने-अपने गुण कर्म स्वभाव युक्त होने से परिवर्तन होते हैं। (सत्यार्थ प्रकाश) **नोटः** मनु की कर्मणा वर्ण व्यवस्था वर्तमान में पूर्ण रूप से विकृतीकरण हो गया है। आज हिन्दु समाज में विकृत जन्मा जाति-व्यवस्था प्रचलित है, जबकि धर्मशास्त्रों ने वेदानुकूल ग्रन्थों में कहीं पर भी समर्थन नही किया है फिर भी मनु के नाम से जोडकर हिन्दु धर्म (वैदिक धर्म) की निन्दा करने का व्यापक राजनैतिक षड्यन्त्र चल रहा है।

नाम के आगे जातिवाचक शब्द हटाना होगाः- प्रत्येक आर्य व आर्य समाजी विचार वाले व अन्य सुधारवादी सज्जनों को अपने नाम के आगे जातिवाचक शब्द हटाना चाहिये। आर्य समाजी स्वंय जातिवाद के कटघरे में खड़ा है। हम दूसरों को क्या संदेश दे रहे है। महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों पर चल कर ही आर्य समाज उन्नति कर सकता है।

शास्त्रानुकूल शूद्र की परिभाषा :- परिवारों में जो पढ़ाने से भी न पढ़े सुनने से भी न सुने, आगे बढ़ने का प्रयत्न न करें, उसे शूद्र की संज्ञा दी जाती थी किन्तु भेदभाव नही था वर्तमान में विज्ञान युग चल रहा है, सभी परिवारों में युवा-युवती शिक्षित है अतः शूद्र अब अर्थात् (अनपढ़) अंगुलियों में गिनने लायक रह गये है। फिर शूद्र कहाँ है।

अज्ञान एवं अंहकार के कारण व्यवसायनुकूल नीच जाति व्यवस्था बनाई गई जो-जो जिस व्यवस्था के कारण अर्थात् जैसे-लोहार, टम्टा मिस्त्री, दर्जी, (औजी) जो ढ़ोल बजाते है, व बुनकर आदि को अछूत व नीच जाति का समझा जाता है, परन्तु अब स्वर्ण जातियों ने उक्त व्यवसायों को अपना लिया है तो फिर अब जाति व्यवस्था में ऊँच-नीच छुआछूत क्यों है। उसे खत्म करना पड़ेगा, व्यवसायों में समानता आ गई है।

अवैदिक राजनीति के कारण जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है- भारत की राजनीति पूर्ण रुप से जातियों के नाम से वोट बैंक बना रही है कि यह एक जातिवाद कायम रहने का नासूर बन गया है। कालान्तर में यह कृत्य भयंकर विस्फोट करेगा। सारा भारत जातिवाद वर्गवाद में बंट गया है इसे समाप्त करना पडेगा। हमें स्मरण रखना चाहिये यह विज्ञान का युग है अर्थात् विज्ञान चरम सीमा तक पहुँच रहा है। फिर मानव जातियों में ऊँच-नीच छुआछूत क्यों हो रहा है। जब ईश्वर अपने सम्पूर्ण तत्वों को बिना भेदभाव के सब प्राणियों को देते हैं तो मनुष्य क्यों भेदभाव करता है क्या

नूतन निष्काम पत्रिका वर्ष-७ अंक-३ मुम्बई मार्च - २०१६ || पृष्ठ-१६ || मूल्य- रु. ९/-

फाल्गुन २०७१ (२०१६) Post Date : 25-3-2016 MCN/136/2016-2018 MAHRIL 06007/31/12/2015-TC पोष्ट आफिस : सांताक्रुज़ (प.)

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का मुखपत्र

संपादक : संगीत आर्य

मुद्रक एवं प्रकाशक : चन्द्रपाल गुप्त द्वारा कृष्ण प्रिंटिंग प्रेस, २६, मंगलदास रोड, मुंबई-२. से मुद्रित कराकर आर्य समाज भवन, वी. पी. रोड, (लिंकिंग रोड़), सान्ताक्रुज़ (प.) मुंबई-४०० ०५४. से प्रकाशित किया। ● दूरभाष : २६६० २८००/२६६०२०७५

प्रति, ______ ______

______ ______

______ ______

टिकट

मनुष्य ईश्वर से भी बड़ा है।

भारत सरकार को आरक्षण की भीख देना समाप्त करनी चाहिये-

भारत की स्वतन्त्रता के उपरान्त शोषित व अत्यन्त गरीब नागरिकों के लिए उस वक्त आरक्षण तो ठीक था, किन्तु आरक्षण को निरन्तर बनाये रखना ठीक नही है। अब वर्तमान में आरक्षण से लाभ के बजाय जातिवाद को बढ़ावा मिल रहा है और इसका लाभ समृद्ध परिवार अधिकांश उठा रहे हैं। अतएव आरक्षण कानून समाप्त होना चाहिये और भारत वर्ष में गरीब, अतिगरीब की श्रेणी बनाकर सरकार को उनकी सहायता करनी चाहिये।

आर्यसमाज तथा अन्य सुधारवादी संगठनों से निवेदन :-

यह सर्वमान्य है कि आर्यसमाज सुधारवादी संगठन है और आध्यात्मिक, सामाजिक व राजनैतिक तीनों विधाओं में सुधार क्रान्ति वाला होने से सर्वोपरि संगठन है और जो अन्य संगठन समाज सुधार में सक्रिय है वह भी साधुवाद के पात्र है। समय आ गया है कि सभी मिलकर इस जातिवाद को भारत वर्ष में जड़ से समाप्त करने में आन्दोलित होवे। इस कथित जातिवाद से भारत ने बहुत हानि उठाई है और अब भी जातिवाद के कारण मानव जगत में शीत क्रान्ति चल रही है। यदि हमने जातिवाद को समाप्त कर दिया तो हम ईश्वरीय सिद्धान्तों के अति समीप पहुँच जायेंगे। अर्थात् ईश्वर की व्यवस्था में चलकर सुख व शान्ति पायेंगे। आर्य समाज संगठन को अब सुधारवादी कार्यों में आन्दोलित होना ही पड़ेगा।

जन्म के आधार पर जाति मानने से हानि ही हानि:-

जब से जाति का आधार जन्म से माना जाने लगा और शूद्र या कथित छोटी जाति में जन्म लेने वाला छोटी जाति का माना जाने लगा, उसी समय से हमारा पतन होना प्रारम्भ हुआ। इसका दण्ड हमने कम नही भोगा है और भोग रहे हैं। सदियों की दासता सहनी पड़ी। विश्व गुरु भारत को किस किस का गुलाम नहीं बनना पड़ा। भारतवासियों को एक होते हुए भी अनेकता में बटना पड़ा ज्ञान विज्ञान के शिखर पर पहुँची यह मानव जाति अज्ञान के अन्धकार में भटकने को विवश हो रही है।

पता - गढ़निवास मोहकमपुर
देहरादून

विचार शक्ति का चमत्कार

(हम दूसरों के बारे में क्या सोचते हैं)

हमारा पूरा जीवन दूसरों का निरिक्षण करते हुए बीत जाता है। दूसरों के प्रति हमारे विचार कैसे हों यह निम्न बिचारों से स्पष्ट हो जाएगे।

१) कभी किसी से अपनी बराबरी न करें। हर व्यक्ति को वर्तमान जीवन उसकी गुण कर्म और स्वभाव के कारण होता है।

२) यदि किसी का भला हो रहा हो तो उसकी खुशी में अपनी खुशी समझनी चाहिए जैसे किसी की कन्या का विवाह हो रहा हो या घर में कोई मांगलिक कार्य हो रहा हो तो हमारे अंदर उतनी ही प्रसन्नता होनी चाहिए जितनी उसे हो रही हो।

३) यदि किसी का कोई अनिष्ट हो रहा हो तो हमारे अंदर उतना ही दु:ख या अफसोस उत्पन्न होना चाहिए जितना उसे हो रहा हो जैसे किसी के धन की हानि होना, परिवार के किसी सदस्य का हॉस्पिटल में भर्ती होना इत्यादि।

४) हमें हर व्यक्ति को समझाना चाहिए ताकि हमे सामूहिक प्रार्थना का फल मिल सके। हर व्यक्ति परमात्माकी बनाई मूर्ति है, उसकी भावनाओं को समझाना हमें ईश्वर के निकट ले आता है।

५) हमारे अहं तत्व में 'नम:' शब्द का समावेश होना चाहिए। विनम्रता सर्व श्रेष्ठ गुण है। विनम्रता से ही मानव नीचे से ऊपर उठता है।

६) कभी किसी व्यक्ति के प्रति ईष्या, द्वेष बदले की भावना, बुराई करना या कोसना नहीं चाहिए। इससे हमारे ही पुण्य क्षीण होते है।

७) बुरे विचारों के बीज से कभी अच्छी फसल नहीं कट सकती। हर व्यक्ति परमात्मा की बनाई मूर्ति है। हम जितनी घृणा इससे करेंगे, उतना ही परमात्मा से कोप का भागी बनेगे। यह, भावना हमारे जीवन में पग पग पर व्यवधान उत्पन्न करती है। अगले अंक में जारी। धन्यवाद।

राजकुमार भगवती प्रसाद गुप्त
मंत्री, आर्य समाज, वाशी.